अगस्त, 2026
राष्ट्रीय मासिक समाचार पत्रिका

विकल्प मीमांसा

मूल्यः 40 रुपये

छात्र आंदोलन और वांगचुक फैक्टर

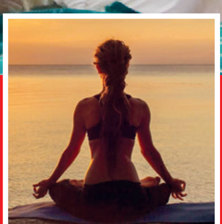

शांति के लिये भावातीत ध्यान... पेज-12

ज्योतिर्लिंग का पुराणकालीन वैद्यनाथ मन्दिर... पेज-28

PATHEYA

PATHEYA

पाथेय

(पीपल्स एशोसियेशन फॉर टोटल हेल्प एंड यूथ अप्लाउज)

आर जेड-एच-15/9, गुरूद्वारा रोड, महाबीर इन्क्लेव, पालम-डाबरी मार्ग, नई दिल्ली-110045

सम्पर्क - 011-20900689, 9953396877

Email pathey_ngo@yahoo.co.in ,patheyango7@gmail.com

Website www.patheyaonline.com

विकल्प मीमांसा

अपने अनुभव का साहित्य किसी दर्शन के साथ नहीं चलता, वह अपना दर्शन पैदा करता है।

वर्ष: 13, अंक: 02, अगस्त 2026

मुद्रक, प्रकाशक व संपादक
सारिका झा

संरक्षक
गिरिजेश चौबे

सलाहकार संपादक
अवधेश कुमार सिंह
धर्मेंद्र मणि राजेश

प्रबंध संपादक
मनोज कुमार झा

कार्यकारी संपादक
बी. के. झा, अमित तिवारी

विशेष संवाददाता
सुकांति साहू, झारखंड

ब्यूरो
मुंबई :- आदित्य झा
लखनऊ :- मनोज त्रिपाठी
बिहार :- केशव कुणाल
लखीमपुर खीरी :- आशीष कटियार
झारखंड :- चिन्मय दत्ता
जयपुर :- अनिल शर्मा

विज्ञापन प्रतिनिधि
भूपेंद्र कुमार ओझा, नीरज ठाकुर

ग्राफिक डिजाइनर
प्रीति ओझा

कानूनी सलाहकार
रजनीश सिंह, ब्यूटी सिंह

प्रेरक
स्वर्गीय रत्नप्रभा सिंह

सभी विवादों का निपटारा दिल्ली की सक्षम अदालतों और फोरमों में किया जाएगा।

मुद्रक तथा प्रकाशक सारिका झा द्वारा (स्वामी सारिका झा) के पक्ष में इंडिया ग्राफिक सिस्टम्स प्राइवेट लिमिटेड, एफ - 23 ओखला फेज-1, दिल्ली से मुद्रित तथा सी-163, गली नं. 38, महावीर एंक्लेव, पार्ट-3 से प्रकाशित, संपादक-सारिका झा

कार्यालय पता
सी-163, गली नं. 38, महावीर एंक्लेव, पार्ट-3, नई दिल्ली-59
फोन नं. 9350993815, 9999496969, 9560747441

E-mail: vikalpmimansa@yahoo.in

छात्र आंदोलन और वांगचुक फैक्टर... पेज-6

सदियों पुरानी परंपरा का जीवंत... पेज-16

स्मार्टफोन: संयमित उपयोग की... पेज-19

प्रेम में डूबी एक अल्हड़ प्रेयसी... पेज-22

क्या समाज संवेदनहीनता की ओर बढ़ रहा है?... पेज-32

हमारा संकल्प

विकल्प मीमांसा का यह अंक हमारे समाज के हर व्यक्ति को समर्पित है। इसका मूल उद्देश्य विशुद्ध पत्रकारिता के जरिए एक का संदेश दूसरे तक पहुंचाना है। इस पत्रिका में समाचार के साथ विचारों का भी मंथन आप पढ़ व महसूस कर सकेंगे। हमारी कोशिश लेख को उसी कलेवर में आपके सामने लाने की होगी, जैसा आप हमेशा से पढ़ना चाहते हैं। हम अपनी इस कोशिश से समाज के सही दिशा निर्देश के लिए सकारात्मक कदम उठाना चाहते हैं। हमें आपके साथ की जरूरत है। इस मासिक पत्रिका में राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक पहलुओं से जुड़े लेख प्रकाशित किए जाएंगे। हमारा उद्देश्य उन पहलुओं पर भी गौर करना है, जो महत्वपूर्ण होकर भी संज्ञान में नहीं है। पत्रिका में आपके सुझाव एवं विचार सादर आमंत्रित हैं।

VIKALP MIMANSA

देश-दुनिया के ताजा घटनाक्रमों पर नजर रखने और विभिन्न मसलों पर नवीन विचारों से अवगत होने के लिए विजिट करें

VIKALPMIMANSA.COM

सारिका झा

संपादक की कलम से

न्यारा है जेन ज़ी

बचपन, किशोरावस्था, युवावस्था, अधेड़ावस्था और बुढ़ापा, ये ऐसे चरण हैं जो हर पीढ़ी देखती है। अब तक यह क्रमवार व्यतीत होते हुए पल बिना किसी शोर शराबे के पीढ़ियों में तब्दील होते रहे। इस सत्य के साथ कि कुछ बदलता नहीं बस वक्त के साथ चेहरे बदलते रहते हैं। मगर हाल के दिनों में पीढ़ियां चुपचाप नहीं बदली बल्कि नयी पीढ़ी ने पुराने ढर्रे को भरभराकर गिरा दिया और नई परिभाषा लिख दी।

आज की नौजवान पीढ़ी स्वयं को जेन ज़ी व अपग्रेडेड जेन अल्फा के रूप में प्रस्तुत कर रही हैं, और दुनियां को बता रही है कि वह सबसे कितनी अलग है। दरअसल, सामाजिक शोधकर्ताओं द्वारा लगभग 15 वर्षों के अंतराल के तहत अलग-अलग पीढ़ियों के विशिष्ट नाम रखे गये। इनमें 1965 से 1980 के बीच पैदा हुए लोगों को जेनेरेशन एक्स, 1981 से 1996 के दौरान जन्मे लोगों को जेन वाई कहा गया। जेन वाई को आज हम मिलेनियल्स के रूप में भी जानते हैं। इसी तरह 1997 से 2012 के बीच पैदा हुए बच्चों को जेन ज़ी कहा गया। अब यहां अंग्रेजी की वर्णमाला खत्म हुई तो ऑस्ट्रेलिया के सामाजिक शोधकर्ता ने 2010 से 2024 के बीच पैदा हुए बच्चों को ग्रीक वर्णमाला के पहले अक्षर अल्फा(ए) नाम से संबोधित किया। इसी तरह 2025 से 2039 के बीच पैदा हुए लोगों को अल्फा के बाद बीटा(बी) के नाम से जाना जाएगा और आने वाले वर्षों में ऐसे ही पीढ़ियों के नाम बदलते जाएंगे। सोशल रिसर्चर्स के द्वारा अलग-अलग नामों से पहचानी जाने वाली पीढ़ियों की कार्यशैली, सोचने और भावनाओं को व्यक्त करने का तरीका भी बिल्कुल अलग व्यक्त किया गया है। एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी से थोड़ी अलग सोच रखती है।

पीढ़ियों में अंतर की बात करें तो समाज के बारे में गहन विचार रखने वाले ब्रिगेडियर शरदेंदु(रिटायर्ड, भारतीय सेना) के अनुसार हर जेनरेशन पुराने जेनरेशन से बेहतर सोचती है। मगर व्यवहारिक जीवन में लोग इसे सहर्ष स्वीकार करना नहीं चाहते। उदाहरण के तौर पर देखें तो टीवी के एक धारावाहिक तारक मेहता का उल्टा चश्मा में शिक्षक की भूमिका निभा रहे आत्माराम तुकाराम भिड़े अपने लगभग हर संवाद में हमारे जमाने (उनके जमाने) की बात करते हैं। आम जीवन में भी यह बात लगभग हर घर में बड़ों द्वारा नई पीढ़ी को बताई जाती रही है। अब यह बात आज की नौजवान पीढ़ी (जेन ज़ी) को बासी लगने लगी है, क्योंकि वह दुनिया को स्पष्ट नजरिये से देख और महसूस कर रही है।

सबके दिल में यह सवाल है कि आखिर आज का नौजवान इतना मुखर, इतना बेबाक क्यों है? जिसे घर से लेकर समाज और देश की राजनीति तक इस बदलती परिस्थिति को देखने, समझने और उसमें ढ़लने की जरूरत महसूस करने लगी है।

देखा जाए तो पीढ़ियों की सोच निरंतर हो रहे विज्ञान और तकनीकी अविष्कारों पर अधिक टिकी रही हैं। सुविधाओं के अनुसार विचार में नवीनता भी आती है। कभी संदेशों को पहुंचाने के लिये डाकघरों के आसरे रहने वाली पीढ़ी बदलती हुई विकास की इतनी सीढ़ियां चढ़ चुकी हैं कि चुटकी में दुनिया तक अपनी बात पहुंचा सकती हैं। 5 जी की स्पीड से चलने वाली यह पीढ़ी एआई के साथ न जाने कितनी आगे निकल चुकी है, जिसका अंदाजा अब लगने लगा है।

सोशल मीडिया और संचार क्रांति के युग में जीने वाली यह पीढ़ी किसी भी विषय पर कुछ ही मिनट में जानकारी एकत्र कर लेती है। हर वस्तु स्थिति को लेकर जागरूक है, इसलिये किसी की कही बातों और पारंपरिक सोच को तोड़ने की हिम्मत रखती है। तकनीक के साथ दोस्ती ने इन्हें ज्ञानवर्धन के साथ ही दुनिया के सामने मुखर होना भी सिखाया है। वास्तव में यह स्मार्ट जेन ज़ी न्यारा है, जो अपने लिये एक सुनहरी दुनिया बनाने का सपना तो देखता है मगर किसी जाति, धर्म से ऊपर उठकर सबके लिये बराबरी के अवसर भी ढूंढ़ता है।

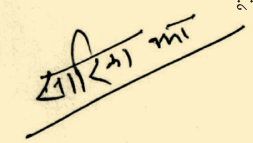

पर्यावरणविद् और शिक्षा सुधारक सोनम वांगचुक की अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल ने एक छात्र आंदोलन को शासन, जवाबदेही और लोकतांत्रिक असहमति पर एक व्यापक बहस में बदल दिया।

आवरण कथा

छात्र आंदोलन और वांगचुक फैक्टर

बी. के. झा

नीट परीक्षा पेपर लीक विवाद को लेकर हफ्तों की बढ़ती जनता की नाराजगी के बाद केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान का इस्तीफा सरकार पर राजनीतिक दबाव को अस्थायी रूप से कम कर सकता है। फिर भी, हाल के वर्षों की सबसे नाटकीय विरोध आंदोलनों में से एक को लेकर बड़े सवाल अभी भी अनसुलझे हैं। इन सवालों के केंद्र में पर्यावरणविद् और शिक्षा सुधारक सोनम वांगचुक हैं, जिनकी अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल ने एक छात्र आंदोलन को शासन, जवाबदेही और लोकतांत्रिक असहमति पर एक व्यापक बहस में बदल दिया।

घटनाओं की श्रृंखला—लद्दाख आंदोलन के दौरान वांगचुक की हिरासत से लेकर संसद मार्च की योजना से ठीक पहले उन्हें जंतर मंतर से हटाए जाने तक—इस बात को लेकर अटकलें बढ़ा रही है कि सरकार ने शायद एक सोची-समझी रणनीति अपनाई हो ताकि वह देशव्यापी विरोध का मुख्य चेहरा बनने से बच सकें।

हालांकि ऐसी किसी रणनीति को तय करने के लिए कोई आधिकारिक सबूत नहीं है, फिर भी यह टाइमलाइन गंभीर राजनीतिक चर्चा का विषय बन गई है। मामला अब सिर्फ यह नहीं है कि वांगचुक को चिकित्सा कारणों से अस्पताल में भर्ती कराया गया था या नहीं, यह राजनीतिक प्रबंधन, सार्वजनिक धारणा, और लोकतांत्रिक विरोध की छवि पर व्यापक बहस में बदल गया है।

पारंपरिक राजनीति से परे एक प्रदर्शनकारी

सोनम वांगचुक ने भारत के सार्वजनिक जीवन में एक अनोखी जगह बनाई है। पारंपरिक विपक्षी नेताओं की तरह नहीं, वह अपनी शिक्षा, नवाचार, सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण के काम से विश्वसनीयता हासिल करते हैं। वैकल्पिक शिक्षा और जलवायु संबंधी कार्यों में उनके योगदान के लिए उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचाना गया है, और आम तौर पर उन्होंने पार्टीगत राजनीति से दूरी बनाए रखी है।

पिछले दो सालों में वह अंतर खासकर महत्वपूर्ण हो गया।

लद्दाख के लिए संवैधानिक सुरक्षा की मांग, राज्य का दर्जा वापस दिलाने और छठे अनुसूची में शामिल करने के लिए उनकी मुहिम पहले ही केंद्र सरकार पर काफी राजनीतिक दबाव डाल चुकी थी। उस आंदोलन के दौरान, वांगचुक ने सीमा अवसंरचना और चीन से जुड़े क्षेत्रीय मुद्दों को भी उठाया। ऐसे मुद्दे जिनपर देश में जोरदार बहस हुई।

हालांकि उनके कई सार्वजनिक बयान सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और राजनीतिक मंडलों में अलग-अलग तरीके से समझे गए, उनकी व्यक्तिगत विश्वसनीयता अधिकांश लोगों के बीच काफी हद तक बरकरार रही। वह विश्वसनीयता बाद में पेपर लीक आंदोलन का मुख्य तत्व बन गई।

लद्दाख से दिल्ली तक

सितंबर 2025 में लेह में हुए हिंसक प्रदर्शन के बाद, वांगचुक को राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम (एनएसए) के तहत हिरासत में लिया गया और बाद में जोधपुर जेल में रखा गया। सरकार ने कहा कि गंभीर कानून-व्यवस्था की गड़बड़ियों के बाद सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखना जरूरी था।

मार्च 2026 में उनकी हिरासत को रद्द कर दिया गया था। कुछ महीनों के भीतर, वांगचुक फिर से सामने आए—लेकिन लद्दाख मुद्दे पर नहीं बल्कि पूरे भारत के लाखों छात्रों को प्रभावित करने वाले मामले पर। बार-बार परीक्षा पत्र लीक होने के खिलाफ देशव्यापी अभियान में शामिल होते हुए, उन्होंने 28 जून को जंतर मंतर पर अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल शुरू कर दी। यह शुरुआत में सिर्फ एक छात्र-नेतृत्व वाले प्रदर्शन जैसा लग रहा था, वह जल्द ही एक बहुत बड़ी नैतिक दिशा ले गया। यह मुद्दा अब केवल

बार-बार परीक्षा पत्र लीक होने के खिलाफ देशव्यापी अभियान में शामिल होते हुए, उन्होंने 28 जून को जंतर मंतर पर अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल शुरू कर दी। यह शुरुआत में सिर्फ एक छात्र-नेतृत्व वाले प्रदर्शन जैसा लग रहा था, वह जल्द ही एक बहुत बड़ी नैतिक दिशा ले गया। यह मुद्दा अब केवल परीक्षा में अनियमितताओं का नहीं रहा। यह अब निष्पक्षता, पारदर्शिता और भारत के युवाओं के भविष्य का सवाल बन गया।

परीक्षा में अनियमितताओं का नहीं रहा। यह अब निष्पक्षता, पारदर्शिता और भारत के युवाओं के भविष्य का सवाल बन गया।

नैतिक अधिकार की राजनीति

राजनीतिक विरोध अक्सर या तो संख्या से या प्रतीकात्मकता से ताकत लेते हैं। पेपर लीक आंदोलन के पास पहले से ही पहली चीज़ थी। वांगचुक ने दूसरी चीज़ लाई। विपक्षी राजनेताओं के विपरीत, उन्हें आसानी से चुनावी लाभ लेने वाला नहीं दिखाया जा सकता था। एक शिक्षक और सार्वजनिक बुद्धिजीवी के रूप में उनकी छवि ने आंदोलन को नैतिक वैधता दी, जिसने सरकार की राजनीतिक प्रतिक्रिया को जटिल बना दिया।

यह अंतर मायने रखता था। सरकारें अक्सर विपक्ष द्वारा आयोजित प्रदर्शनों का राजनीतिक संदेशों के जरिए जवाब देती हैं। हालांकि, किसी सम्मानित नागरिक समाज के व्यक्ति को जवाब देना अलग रणनीति मांगता है क्योंकि ऐसे व्यक्तियों की आलोचना पार्टी लाइनों के बाहर भी असर डालती है।

जैसे-जैसे वांगचुक का उपवास चलता रहा, उनके स्वास्थ्य को लेकर चिंताएं बढ़ती गईं। इसी दौरान, लोगों का ध्यान परीक्षा सुधारों के तरीके से हटकर सरकार के शांतिपूर्ण विरोध को संभालने के तरीके पर चला गया।

20 जुलाई से पहले का महत्वपूर्ण समय

राजनीतिक पर्यवेक्षकों और घटनाओं से परिचित स्रोतों के अनुसार, सबसे बड़ा मोड़ 20 जुलाई को प्रस्तावित संसद मार्च से ठीक पहले आया। वांगचुक ने सार्वजनिक रूप से घोषणा की थी कि वह मार्च तक अपनी भूख हड़ताल जारी रखेंगे और व्यक्तिगत रूप से प्रदर्शन नेतृत्व करेंगे।

आवरण कथा

इसके बजाय, 18 जुलाई को दिल्ली पुलिस ने उन्हें जंतर मंतर से सफदरजंग अस्पताल स्थानांतरित कर दिया, जब वह बीस से अधिक दिनों तक उपवास कर रहे थे। अधिकारी का तर्क उनके बिगड़ते स्वास्थ्य और राज्य की जिम्मेदारी पर आधारित था कि चिकित्सा जटिलताओं को रोका जा सके।

हालाँकि, वांगचुक ने अलग कहानी बताई। अस्पताल से जारी एक हस्तलिखित नोट में उन्होंने दावा किया कि उन्हें उनकी मर्जी के खिलाफ भर्ती कराया गया था और उनकी आवाजाही, संचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर पाबंदियाँ लगाई गई थीं।

इन प्रतिस्पर्धी कथनों ने दो समानांतर व्याख्याएँ पैदा कीं। सरकार के अनुसार यह हस्तक्षेप एक मानवीय और प्रशासनिक आवश्यकता का प्रतिनिधित्व करता था। उनके समर्थकों के नजरिये से, इसने आंदोलन का सबसे पहचाना जाने वाला चेहरा सबसे संवेदनशील राजनीतिक समय पर हटा दिया।

किसी भी व्याख्या को स्वतंत्र रूप से निश्चित रूप से स्थापित नहीं किया गया है।

क्या प्रदर्शन की रफ्तार कम हो गई?

कुछ लोगों की उम्मीद के विपरीत, वांगचुक के अस्पताल में भर्ती होने के बाद आंदोलन कम नहीं हुआ। संसद मार्च में छात्रों और युवा प्रदर्शनकारियों की अच्छी भागीदारी हुई। उस समय तक पेपर लीक विवाद एक बड़े राजनीतिक मुद्दे में बदल गया था, जो सरकार की जवाबदेही, संस्थागत विश्वसनीयता, और भर्ती सुधार से जुड़ा था।

विडंबना यह है कि इस आंदोलन ने यह दिखाया कि जबकि वांगचुक इसका नैतिक प्रतीक बन गए थे, आंदोलन ने खुद एक स्वतंत्र गति हासिल कर ली थी।

यह अंतर राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है। एक नेता को वास्तविक प्रदर्शन स्थल से हटा देना जरूरी नहीं कि आंदोलन को कमजोर कर दे, जब जनता का गुस्सा मुश्किल स्तर तक पहुँच चुका हो।

वो इस्तीफ़ा जिसने कहानी बदल दी

पाँच दिन बाद, केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने इस्तीफा दे दिया। इस इस्तीफे ने तुरंत ही राजनीतिक बातचीत को बदल दिया। वांगचुक ने इस घटना को लोकतांत्रिक भागीदारी और शांतिपूर्ण सार्वजनिक लामबंदी की जीत के रूप में बताया।

फिर भी इसने एक और सवाल पैदा किया जो राजनीतिक विश्लेषण में अभी भी छाया हुआ है। अगर वांगचुक उन निर्णायक दिनों में जंतर मंतर पर बने रहते, तो मंत्री के इस्तीफे का दृश्य और राजनीतिक प्रभाव मूल रूप से अलग होता?

राजनीति अक्सर नीतियों जितनी ही कल्पना पर भी निर्भर करती है।

अगर एक राष्ट्रीय रूप से सम्मानित एक्टिविस्ट के प्रदर्शन स्थल पर अनिश्चितकालीन उपवास के रहते एक मंत्री इस्तीफा दे दे तो यह संदेश जाता है कि लगातार शांतिपूर्ण विरोध ने राजनीतिक जवाबदेही को मजबूर किया।

इसके बजाय, वांगचुक अस्पताल में बने रहे जबकि राजनीतिक घटनाएँ कहीं और हो रही थीं। यह क्रम संयोग, प्रशासनिक आवश्यकता या रणनीतिक राजनीतिक योजना का परिणाम था या नहीं, यह बात अब तक अनसुलझी प्रतीत होती है।

एक पैटर्न या सिर्फ संयोग?

वांगचुक के समर्थक तर्क करते हैं कि जब भी वह किसी बड़े सार्वजनिक मुद्दे के केंद्र में आते हैं, उनके प्रभाव को कम करने के लिए समन्वित राजनीतिक कथन भी सामने आते हैं। ऐसा, उनके लद्दाख आंदोलन के दौरान, इससे पहले कि प्रदर्शन अपने अपेक्षित चरम पर पहुँचता, उनकी हिरासत, सोशल मीडिया पर उन पर की गई आलोचना और अंत में उनको हटाया जाना इस बात की ओर इशारा करते हैं

दूसरी तरफ, सरकारी प्रतिनिधि राजनीतिक निशाना बनाने के सुझावों को खारिज करते हैं और कहते हैं कि हर फैसला मौजूदा प्रशासनिक और सुरक्षा परिस्थितियों के आधार पर स्वतंत्र रूप से लिया गया था।

दस्तावेज़ी प्रमाण के बिना यह निष्कर्ष निकालना अनुचित होगा कि ये घटनाएं किसी पूर्व नियोजित राजनीतिक रणनीति का हिस्सा थीं। हालांकि, राजनीतिक विश्लेषक मानते हैं कि इसके समय के कारण इस गतिविधि ने निश्चित रूप से जांच को आमंत्रण दिया है।

एक व्यक्ति से परे

वांगचुक प्रकरण का बड़ा महत्व सिर्फ उसके व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं है। यह भारत में लोकतांत्रिक सक्रियता के बदलते स्वरूप को दर्शाता है। पारंपरिक राजनीतिक आंदोलनों की तरह जो पार्टियों द्वारा चलाए जाते हैं, अब आंदोलन अक्सर स्वतंत्र सार्वजनिक हस्तियों के इर्द-गिर्द घूमते हैं जिनकी विश्वसनीयता विचारधाराओं की सीमाओं से परे होती है। ऐसे लोग खास राजनीतिक चुनौती पेश करते हैं क्योंकि सरकारें उन्हें आसानी से श्रेणीबद्ध या राजनीतिक रूप से अलग नहीं कर सकतीं।

पेपर लीक आंदोलन ने दिखाया कि जब ऐसे व्यक्तित्व जो राजनीतिक रूप से तटस्थ माने जाते हैं उनका समर्थन होता है, तो युवा-नेतृत्व वाले प्रदर्शन को काफी ज्यादा वैधता मिलती है। किसी भी सरकार के लिए ऐसी परिस्थितियों को संभालना संविधानिक स्वतंत्रताओं, सार्वजनिक व्यवस्था और राजनीतिक संचार के बीच संतुलन बनाने की जरूरत होती है।

बचे हुए सवाल

कई महत्वपूर्ण सवाल अभी भी अनुत्तरित हैं:

Q क्या वोंगचुक का अस्पताल में भर्ती होना सिर्फ उनके स्वास्थ्य को लेकर चिंताओं के कारण एक चिकित्सा हस्तक्षेप था?

Q क्या इसके साथ-साथ कोई राजनीतिक गणना भी थी, ताकि उन्हें एक राष्ट्रीय आंदोलन की प्रमुख छवि बनने से रोका जा सके?

Q क्या सरकार यह सुनिश्चित करने की कोशिश कर रही थी कि किसी भी राजनीतिक रियायत, जैसे कि शिक्षा मंत्री का इस्तीफा, को किसी स्वतंत्र नागरिक समाज की हस्ती से लगातार दबाव के साथ सार्वजनिक रूप से जोड़ा न जाए?

घटनाओं की समयरेखा ने यह सुनिश्चित कर दिया है कि

Q 'वांगचुक फैक्टर' को लेकर बहस जल्द ही खत्म होने वाली नहीं है। चाहे इसे संयोग माना जाए या सावधानीपूर्वक राजनीतिक प्रबंधन, यह घटना इस बात को उजागर करती है कि भारत में लोकतांत्रिक राजनीति में प्रतीकवाद, समय और सार्वजनिक धारणा कितना महत्वपूर्ण बनते जा रहे हैं।

Q आख़िरकार, यह कहानी सिर्फ सोनम वांगचुक या किसी मंत्री के इस्तीफे के बारे में नहीं है। यह नागरिक आंदोलनों और राज्य की शक्ति के बदलते रिश्तों के बारे में है, और यह कि सरकारें कैसे प्रतिक्रिया देती हैं जब कोई प्रदर्शन राजनेताओं द्वारा नहीं, बल्कि ऐसे व्यक्तियों द्वारा नेतृत्व किया जाता है जिनका नैतिक अधिकार, पार्टी राजनीति से ऊपर है।

शांति के लिये भावातीत ध्यान

योगाचार्य लक्ष्मी नारायण

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में तनाव, चिंता और मानसिक थकान आम समस्या बन चुकी है। ऐसे में भावातीत ध्यान (Transcendental Meditation) एक ऐसी ध्यान पद्धति है, जो मन को गहरे स्तर पर शांत करने और मानसिक संतुलन बनाए रखने में मदद कर सकती है। इस ध्यान का उद्देश्य विचारों से लड़ना नहीं, बल्कि मन को सहज रूप से गहरी शांति की अवस्था तक पहुंचाना होता है।

हालांकि, ध्यान रखें कि ध्यान मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में सहायक हो सकता है, लेकिन यह किसी बीमारी का इलाज नहीं है। यदि किसी व्यक्ति को गंभीर मानसिक या शारीरिक समस्या है, तो उसे डॉक्टर की सलाह अवश्य लेनी चाहिए।

भावातीत ध्यान कैसे करें?

भावातीत ध्यान करने की सामान्य विधि इस प्रकार है—

1 शांत स्थान चुनें

ऐसी जगह बैठें जहां कुछ समय तक कोई व्यवधान न हो। वातावरण जितना शांत होगा, ध्यान लगाना उतना आसान होगा।

2 आरामदायक मुद्रा में बैठें

कुर्सी, सोफा या जमीन पर आराम से बैठ सकते हैं। रीढ़ को सहज रखें और शरीर को ढीला छोड़ दें।

3 आंखें बंद करें

कुछ क्षण सामान्य रूप से सांस लेते हुए शरीर और मन को शांत होने दें। सांस को नियंत्रित करने की आवश्यकता नहीं होती।

4 किसी मंत्र या शब्द पर ध्यान केंद्रित करें

भावातीत ध्यान में आमतौर पर एक विशेष मंत्र का मन ही मन दोहराया जाता है। ध्यान रखें कि पारंपरिक भावातीत ध्यान में मंत्र प्रशिक्षित शिक्षक द्वारा व्यक्तिगत रूप से दिया जाता है। स्वयं किसी भी सरल ध्वनि या शब्द का शांत मन से दोहराव शुरुआती अभ्यास के रूप में किया जा सकता है।

5 विचार आने दें

यदि ध्यान के दौरान मन में विचार आएं तो उन्हें रोकने या हटाने की कोशिश न करें। जब ध्यान भटक जाए तो धीरे-धीरे फिर से मंत्र पर लौट आएं।

6 15 से 20 मिनट तक अभ्यास करें

रोजाना सुबह और शाम लगभग 15 से 20 मिनट का अभ्यास लाभकारी माना जाता है।

भावातीत ध्यान के संभावित फायदे

नियमित अभ्यास से कई लोगों को निम्नलिखित लाभ महसूस हो सकते हैं—

- मानसिक तनाव कम करने में मदद मिल सकती है।
- मन को शांत और स्थिर रखने में सहायक हो सकता है।
- एकाग्रता और फोकस बेहतर हो सकता है।
- नींद की गुणवत्ता में सुधार आ सकता है।
- दैनिक कार्यों में सकारात्मकता और ऊर्जा महसूस हो सकती है।
- भावनात्मक संतुलन बनाए रखने में सहायता मिल सकती है।

ध्यान रखें कि इन लाभों का अनुभव व्यक्ति-व्यक्ति पर अलग हो सकता है और इनके समर्थन में उपलब्ध वैज्ञानिक प्रमाण सभी दावों के लिए समान रूप से मजबूत नहीं हैं।

ध्यान करते समय रखें ये बातें

खाली या हल्के पेट ध्यान करना बेहतर माना जाता है।

- शुरुआत में कम समय से अभ्यास शुरू करें।
- ध्यान के दौरान शरीर पर अनावश्यक दबाव न डालें।
- नियमित अभ्यास करने से बेहतर अनुभव मिल सकता है।
- यदि ध्यान करते समय बेचैनी या असामान्य परेशानी महसूस हो, तो अभ्यास रोककर विशेषज्ञ से सलाह लें।

क्या सभी लोग भावातीत ध्यान कर सकते हैं?

अधिकांश स्वस्थ वयस्क इस तरह का ध्यान कर सकते हैं। हालांकि, यदि किसी व्यक्ति को गंभीर मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्या है या वह किसी विशेष उपचार के दौर से गुजर रहा है, तो ध्यान शुरू करने से पहले डॉक्टर या योग्य मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ से सलाह लेना उचित रहेगा।

नोट- यह लेख जागरूकता के लिये है, इसे मेडिकल सलाह न समझें। किसी व्यक्तिगत समस्या के लिये चिकित्सक से संपर्क करें।

निष्कर्ष

भावातीत ध्यान मन को शांत करने और मानसिक एकाग्रता बढ़ाने का एक लोकप्रिय तरीका है। यदि इसे नियमित रूप से सही विधि के साथ किया जाए, तो यह तनाव कम करने और मानसिक संतुलन बनाए रखने में सहायक हो सकता है। हालांकि, इसे किसी चिकित्सा उपचार का विकल्प नहीं माना जाना चाहिए। स्वस्थ जीवनशैली, पर्याप्त नींद और संतुलित आहार के साथ ध्यान का अभ्यास बेहतर मानसिक स्वास्थ्य की दिशा में एक सकारात्मक कदम हो सकता है।

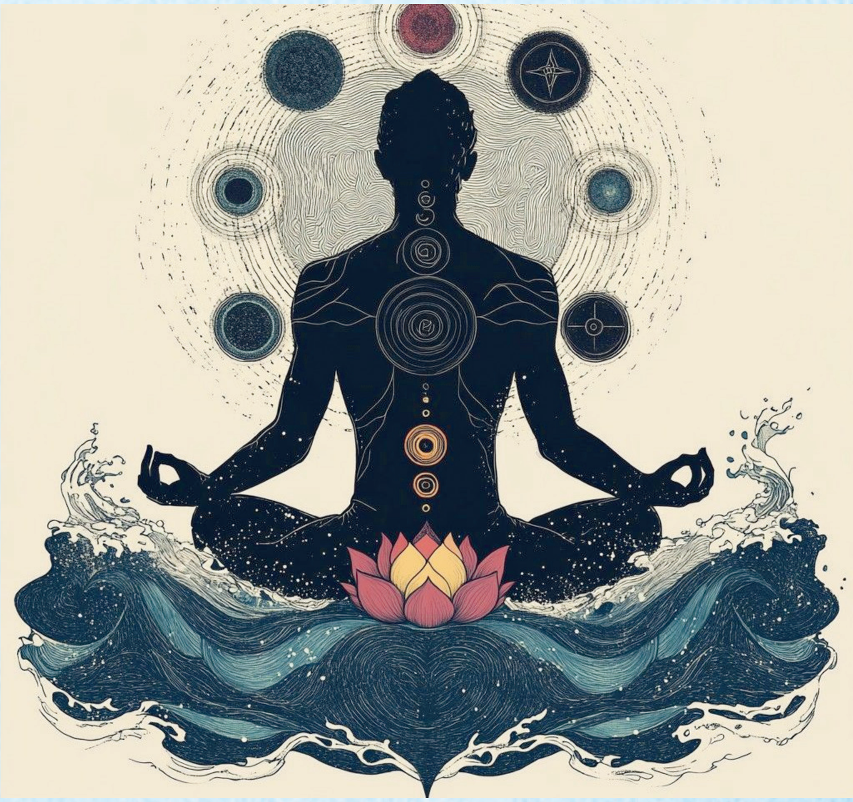

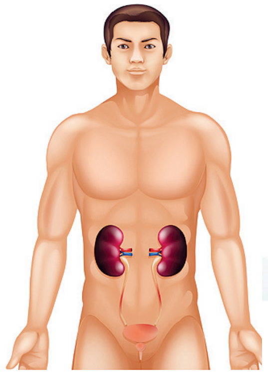

बारिश में बढ़ते हैं यूटीआई के मामले

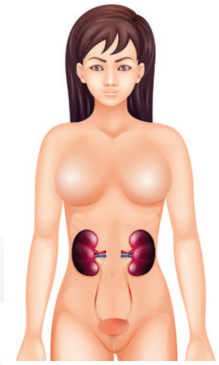

किसी भी महिला या पुरूष में यूरिन यानि पेशाब में जलन और दर्द की समस्या होती है तो उसे यूटीआई(यूरिनरी ट्रैक्ट इंफेक्शन) यानि मूत्र मार्ग संक्रमण से जोड़ा जाता है। बारिश में यूरिनरी इंफेक्शन की समस्या बढ़ जाती है। इसका सबसे बड़ा कारण वातावरण में नमी का होना होता है। अक्सर बारिश के उमस भरे मौसम में अधिक पसीना निकलने से कपड़ों में नमी आ जाती है। इसके कारण बैक्टिरिया के बढ़ने और इंफेक्शन का खतरा ज्यादा होने लगता है। कई बार बाहर का खाना खाने से पेट में इन्फेक्शन की संभावना होती है, वैसे ही यूटीआई की भी संभावना बढ़ने लगती है।

ऐसे में कुछ जरूरी सावधानियां बरतने की जरूरत होती है, जैसे- सूती कपड़े पहनना, लोअर बहुत टाइट नहीं पहनना। हल्के और ढीले-ढाले कपड़े पहनना ज्यादा अच्छा है। ध्यान रखें कि अगर कपड़े गीले हैं तो हमेशा अपने साथ एक दूसरी ड्रेस भी रखें और उसे बदल लें। पानी भरपूर मात्रा में पियें। इसके अलावा नारियल पानी छाछ जूस, फ्लेवर्ड दूध आदि का भी सेवन करें।

बरसात के मौसम में आप अच्छे और सफाई से बनाये जूस का ही इस्तेमाल करें। अगर ऐसा संभव नहीं हो तो आप फलों- जैसे सेब, नाशपाती आदि जैसे मौसमी फलों का सेवन कर सकते हैं।

यूटीआई की समस्या केवल बारिश के पानी से ही नहीं होती बल्कि स्विमिंग पूल में जहां कई लोग स्नान करते हैं, पानी का व्यवस्थित निकासी नहीं है, वहां से भी महिलाओं में यूरिनल इंफेक्शन की समस्या आ सकती है। यूटीआई से पुरूष भी प्रभावित हो सकते हैं, मगर महिलाओं के यूरेथ्रा(मूत्र मार्ग) का आकार छोटा होता है, जिससे उन्हें संक्रमण आसानी से होता है। इसलिये कई बार सार्वजनिक शौचालय में जाने के कारण भी महिलाएं यूटीआई से ग्रसित हो जाती हैं।

यूटीआई से बचाव

अगर कोई महिला या पुरूष यूटीआई का सामना कर रहे हैं, तो आयुर्वेद में कई ऐसी दवाईयां है, जो आसानी से इसे ठीक कर सकती हैं। लेकिन अगर यूटीआई का इलाज नहीं किया गया तो यह शरीर के दूसरे महत्वपूर्ण अंगों को भी नुकसान पहुंचा सकता है।

डॉ. रानी गुप्ता के अनुसार मेडिकल भाषा में लंबे समय तक चल रहे यूटीआई को क्रॉनिक यूटीआई बोलते हैं। इसमें कई बार यूरिथ्रल स्ट्रिक्चर(मूत्रमार्ग संकुचन) होने लगते हैं। यूटीआई के कारण यूरेथ्रा नली में अगर लंबे समय तक सूजन रहे तो वहां पर टिश्यूज आपस में चिपकने के कारण स्ट्रिक्चर बनता है, जिससे यूरिन ठीक से पास न होने की या बार-बार संक्रमण होने की समस्या होने लगती है। यही संक्रमण आगे जाकर किडनी के संक्रमण का भी कारण बन सकता सकता है। वहीं स्त्री रोग की बात करें तो महिलाओं में पीआईडी जिसे पेल्विक इंफ्लेमेट्री डिसऑर्डर कहते हैं, क्रॉनिक यूटीआई, पीआईडी में बदलकर प्रजनन अंग को प्रभावित कर सकता है।

यूरिनरी इंफेक्शन के बारे में उपर्युक्त जानकारी आयुर्वेदिक डॉ. व स्त्रिरोग विशेषज्ञ रानी गुप्ता के द्वारा दी गई है। लेख का उद्येश्य जागरूकता प्रदान करना है। किसी भी व्यक्तिगत सुझाव के लिये विशेषज्ञ चिकित्सक से मिलें। ■

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

विकल्प मीमांसा

सदस्यता कूपन

मैं विकल्प मीमांसा हिंदी मासिक पत्रिका का ग्राहक बनना चाहता/चाहती हूं।

मेरा नाम श्री/श्रीमती ....

मेरा पता ....

जिला .... राज्य .... पिन कोड ....

फोन (आवास)............................ कार्यालय..............................

एक वर्ष के लिए 450 रुपये

दो वर्ष के लिए 850 रुपये

नोट : दरें और पेशकश सिर्फ भारत में ही मान्य हैं। शुल्क प्राप्ति के बाद अंक आप तक पहुंचने में 4-5 सप्ताह समय लग सकता है। पत्रिका केवल साधारण डाक द्वारा भेजी जाएगी। पत्रिका के डाक द्वारा नहीं मिलने या खो जाने की स्थिति में हमारी कोई जिम्मेदारी नहीं होगी। सभी विवादों का निपटाना दिल्ली न्यायालय के अधीन होगा।

सदस्यता शुल्क केवल बैंक डिमांड ड्राफ्ट/चैक/मनी ऑर्डर द्वारा विकल्प मीमांसा के पक्ष में नई दिल्ली में देय होगा।

विकल्प मीमांसा

सी-163, गली नं.38, महावीर एंक्लेव, पार्ट-3, नई दिल्ली-59

फोन नं. 9350993815, 9999496969

E-mail : vikalpmimansa@yahoo.in

सदियों पुरानी परंपरा का जीवंत उत्सव है जगन्नाथ रथ यात्रा

योगेश कुमार गोयल

भारत की धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराएं अनादि काल से मानवता को आध्यात्मिकता, समरसता और भक्ति की राह पर चलने की प्रेरणा देती आई हैं। इन्हीं पवित्र परंपराओं में एक है उड़ीसा के पुरी में निकलने वाली जगन्नाथ रथयात्रा, जो केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं बल्कि करोड़ों आस्थाओं, परंपराओं और लोक मान्यताओं का प्रतीक है। हिंदू पंचांग के अनुसार, आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि से शुरू हुई यह यात्रा नौ दिनों तक चलती है, जो 24 जुलाई को समाप्त हुई। इस दौरान भगवान जगन्नाथ अपने बड़े भाई बलराम और बहन सुभद्रा के साथ भव्य रथों पर सवार होकर पुरी के मुख्य मंदिर से निकलकर मौसी के घर गुंडिचा मंदिर तक की यात्रा करते हैं और फिर वापस मुख्य मंदिर आते हैं। यह आयोजन न केवल भारत के सबसे प्राचीन धार्मिक उत्सवों में से एक है बल्कि विश्व के सबसे बड़े वार्षिक सार्वजनिक आयोजनों में भी इसकी गिनती होती है, जिसमें लाखों श्रद्धालु देश-विदेश से भाग लेने आते हैं।

पुरी का जगन्नाथ मंदिर भारत के चार प्रमुख धामों (बद्रीनाथ, द्वारका, रामेश्वरम और पुरी) में से एक है। यह मंदिर न केवल वास्तुकला की दृष्टि से विशिष्ट है, बल्कि इसकी महत्ता धार्मिक ही नहीं, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और आध्यात्मिक दृष्टि से भी अत्यंत विशिष्ट है। भगवान जगन्नाथ को विष्णु के अवतार के रूप में पूजा जाता है और यह मंदिर उनके भाई बलभद्र तथा बहन सुभद्रा के साथ विराजने वाले एकमात्र मंदिर के रूप में प्रसिद्ध है। रथयात्रा के माध्यम से यह 'त्रिदेव' जब मंदिर की सीमाओं से बाहर निकलते हैं तो भक्तों के लिए यह अवसर होता है प्रभु को निकट से देखने, उनके रथ को खींचने और मोक्ष की दिशा में एक कदम बढ़ाने का। इस रथयात्रा की परंपरा का उल्लेख स्कंद पुराण, ब्रह्म पुराण और अन्य पुरातन ग्रंथों में मिलता है। मान्यता है कि रथयात्रा में भाग लेने और विशेषकर रथ खींचने से समस्त पापों का नाश होता है और व्यक्ति को जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति मिलती है। यह यात्रा मानवीय समर्पण और भक्ति की पराकाष्ठा का जीवंत प्रदर्शन है, जहां हर कोई, चाहे वह राजा हो या आमजन, एक ही पंक्ति में खड़ा होकर भगवान की सेवा करता है।

रथयात्रा की सबसे अनूठी परंपरा है 'छेरा' की रस्म। यह रस्म रथयात्रा के पहले दिन पुरी के राजा द्वारा निभाई जाती है, जिसमें वह सोने की झाड़ू से तीनों रथों की सफाई करते हैं। इस परंपरा का आध्यात्मिक और सामाजिक संदेश अत्यंत गहन है। एक राजा, जो स्वयं राज्य का सर्वोच्च होता है, भगवान के समक्ष स्वयं को एक सेवक मानकर झाड़ू लगाता है। यह प्रतीक है भगवान के समक्ष सभी के समान होने का, जहां न कोई ऊंचा है, न कोई नीचा। यह सामाजिक समरसता का वह आदर्श उदाहरण है, जो आज के समाज में अत्यंत आवश्यक है। जब लाखों की भीड़ 'जय जगन्नाथ' के उद्घोष के साथ इन रथों को खींचती है, तब वह केवल रथ नहीं खींच रही होती, वह अपनी भक्ति, आस्था, सेवा और आत्मशुद्धि की भावना को आगे बढ़ा रही होती है।

भगवान जगन्नाथ, बलराम और सुभद्रा के रथों को नंदीघोष, तालध्वज और दर्पदलन कहा जाता है, जिन्हें हर वर्ष नये सिरे से विशेष प्रकार की नीम की लकड़ी से निर्मित किया जाता है। इन रथों का निर्माण विशेष रीति-रिवाज और शास्त्र सम्मत विधियों से होता है, जिसमें सैंकड़ों शिल्पकार और सेवक कई महीनों तक जुटे रहते हैं। हर रथ की अपनी आकृति, रंग, ध्वज और प्रतीक होते हैं, जो देवताओं के स्वरूप और गुणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। रथों की ऊंचाई और आकृति निश्चित नियमों के अनुसार होती है। नंदीघोष रथ की ऊंचाई लगभग 45 फुट होती है और इसमें 16 चक्के होते हैं। तालध्वज रथ में 14 चक्के होते हैं और इसकी ऊंचाई लगभग 44 फुट होती है। दर्पदलन रथ सबसे छोटा होता है, जिसमें 12 चक्के होते हैं और यह लगभग 43 फुट ऊंचा होता है। यात्रा के दौरान तीनों रथों को श्रीमंदिर से गुंडिचा मंदिर तक खींचा जाता है और वहां सात दिनों तक भगवान विश्राम करते हैं।

रथयात्रा से जुड़े कई पौराणिक प्रसंग भी हैं, जिनमें से सबसे प्रसिद्ध स्कंद पुराण में वर्णित कथा है। इसके अनुसार, एक दिन भगवान श्रीकृष्ण की बहन सुभद्रा ने द्वारका शहर घूमने की इच्छा प्रकट की। तब श्रीकृष्ण और बलराम उन्हें रथ पर बैठाकर नगर दर्शन कराने ले गए। यही प्रसंग पुरी में जगन्नाथ रथयात्रा के रूप में

जीवंत होता है, जहां भगवान अपनी बहन को साथ लेकर नगर भ्रमण के लिए निकलते हैं। इस यात्रा के हर पड़ाव पर धार्मिक रस्में होती हैं, जैसे कि हेरा पंचमी, जब देवी लक्ष्मी क्रोधित होकर भगवान के देर से लौटने पर मंदिर के बाहर प्रतीक्षारत रहती हैं। इसके बाद बहुड़ा यात्रा होती है, जब भगवान जगन्नाथ गुंडिचा मंदिर से वापस अपने मुख्य मंदिर आते हैं। चौबीस जुलाई को वापसी के बाद उनका भव्य स्वागत किया गया और सुनाबेसा रस्म के अंतर्गत उन्हें स्वर्णाभूषणों से सजाया गया।

जगन्नाथ रथयात्रा की लोकप्रियता केवल भारत तक सीमित नहीं है। अमेरिका, ब्रिटेन, रूस, जर्मनी, जापान जैसे कई देशों में इस यात्रा का आयोजन किया जाता है, विशेष रूप से इस्कॉन संस्था द्वारा। इस यात्रा ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की आध्यात्मिक शक्ति और सांस्कृतिक प्रभाव को बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पुरी में हर साल लाखों की संख्या में विदेशी श्रद्धालु आते हैं, जो इस भव्य आयोजन में भाग लेकर भारतीय संस्कृति की गहराई को अनुभव करते हैं। यह भारत की सॉफ्ट पावर का एक जीवंत उदाहरण है, जहां धर्म, संस्कृति और पर्यटन एक साथ राष्ट्र के वैश्विक प्रभाव को मजबूत करते हैं।

भगवान जगन्नाथ, बलराम और सुभद्रा के रथों को नंदीघोष, तालध्वज और दर्पदलन कहा जाता है, जिन्हें हर वर्ष नये सिरे से विशेष प्रकार की नीम की लकड़ी से निर्मित किया जाता है। इन रथों का निर्माण विशेष रीति-रिवाज और शास्त्र सम्मत विधियों से होता है, जिसमें सैंकड़ों शिल्पकार और सेवक कई महीनों तक जुटे रहते हैं।

आज के डिजिटल युग में रथयात्रा की पहुंच और भी व्यापक हो गई है। विभिन्न टीवी चैनलों, यूट्यूब, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स और सरकारी पोर्टल्स पर इस यात्रा का सीधा प्रसारण किया जाता है, जिससे देश और विदेश के करोड़ों लोग इसे अपने घर बैठे अनुभव कर सकते हैं। ओडिशा सरकार और भारत सरकार इस अवसर पर व्यापक व्यवस्थाएं करती हैं, जिसमें सुरक्षा, चिकित्सा, जल आपूर्ति, यातायात नियंत्रण और आपदा प्रबंधन तक की तैयारियां शामिल होती हैं। हजारों पुलिसकर्मी, डॉक्टर, वॉलंटियर्स और सेवक इस आयोजन को निर्बाध रूप से संपन्न कराने में दिन-रात लगे रहते हैं। यह आयोजन जहां एक ओर आस्था का प्रतीक है, वहीं यह प्रशासनिक समन्वय और जन-सहभागिता का भी उत्कृष्ट उदाहरण है।

रथयात्रा का एक महत्वपूर्ण पक्ष है इसकी सामाजिक और आर्थिक भूमिका। इस यात्रा के दौरान लाखों श्रद्धालु पुरी पहुंचते हैं, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी जबरदस्त बल मिलता है। होटल, लॉज, रेस्तरां, हस्तशिल्प, पारंपरिक परिधान और लोक कला से जुड़े व्यवसाय इस अवसर पर खूब फलते-फूलते हैं। पुरी का 'पटकमाल' (महाप्रसाद), स्थानीय शिल्पकारों द्वारा बनाए गए रथ मॉडल्स, पारंपरिक भजन और कीर्तन की प्रस्तुतियां भी इस यात्रा को एक सांस्कृतिक महोत्सव में बदल देती हैं। यह केवल धर्म का उत्सव नहीं, लोकजीवन का उत्सव बन जाता है। कुल मिलाकर, कहा जा सकता है कि जगन्नाथ रथयात्रा न केवल एक धार्मिक उत्सव है, बल्कि भारतीय संस्कृति, समर्पण, समानता और सामाजिक एकता की ऐसी गाथा है, जो पीढ़ियों से चली आ रही है और आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। यह हमें सिखाती है कि जब हम समर्पण के भाव से आगे बढ़ते हैं तो स्वयं ईश्वर हमारे रथ में सवार होकर हमें मार्ग दिखाने आते हैं। ■

स्मार्टफोन: संयमित उपयोग की वैश्विक जरूरत

ललित गर्ग

विज्ञान और तकनीक ने मानव सभ्यता को अभूतपूर्व गति प्रदान की है। आज का युग डिजिटल युग है, जहां एक क्लिक पर पूरी दुनिया हमारी हथेली में सिमट आई है। स्मार्टफोन ने संचार, शिक्षा, व्यापार, बैंकिंग, स्वास्थ्य, शासन और सामाजिक संबंधों को नई दिशा दी है, लेकिन हर तकनीकी क्रांति अपने साथ कुछ गंभीर चुनौतियां भी लेकर आती है। स्मार्टफोन इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। यह जितना बड़ा वरदान सिद्ध हुआ है, उतना ही बड़ा अभिशाप भी बनता जा रहा है। विशेष रूप से बच्चों और किशोरों पर इसके दुष्प्रभावों ने पूरी दुनिया को चिंतित कर दिया है। आज विश्वभर में यह स्वीकार किया जा रहा है कि स्मार्टफोन केवल एक उपकरण नहीं, बल्कि एक ऐसी शक्ति है, जिसका विवेकपूर्ण उपयोग आवश्यक है। दुर्भाग्यवश, विवेक और अनुशासन के अभाव में इसका नकारात्मक पक्ष अधिक मुखर हो रहा है। स्मार्टफोन की लत बच्चों और युवाओं में मानसिक तनाव, अवसाद, एकाकीपन, हिंसक प्रवृत्तियों, अश्लीलता, साइबर अपराध और सामाजिक विघटन का कारण बन रही है। यही कारण है कि आज केवल परंपरागत समाज और विकासशील

टेक्नोलॉजी

देश ही नहीं, बल्कि विकसित देश भी इस चुनौती से निपटने के लिए कठोर कदम उठा रहे हैं।

हाल ही में भारत के हरियाणा के नूंह जिले के सुखपुरी गांव की पहल ने पूरे देश का ध्यान आकर्षित किया। गांव की पहचान साइबर अपराध के केंद्र के रूप में बनने लगी थी। इससे आहत होकर ग्रामीणों ने सामूहिक रूप से स्मार्टफोन त्यागने और बेसिक फोन अपनाने का निर्णय लिया। यह केवल मोबाइल तोड़ने की घटना नहीं, बल्कि समाज की उस पीड़ा की अभिव्यक्ति है, जो तकनीक के दुरुपयोग से उत्पन्न हुई है। गांव के युवाओं का विरोध भी स्वाभाविक है, क्योंकि आज शिक्षा, रोजगार, डिजिटल भुगतान और सरकारी सेवाएं स्मार्टफोन पर निर्भर हैं। इस घटना ने एक महत्वपूर्ण प्रश्न खड़ा किया है-क्या समाधान तकनीक का बहिष्कार है या उसके विवेकपूर्ण उपयोग का संस्कार? विश्व के अनेक देशों ने इस प्रश्न पर गंभीर चिंतन आरंभ कर दिया है। ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस, ब्रिटेन, नीदरलैंड, चीन और अमेरिका जैसे देशों में बच्चों और किशोरों के स्मार्टफोन उपयोग को नियंत्रित करने की दिशा में अनेक पहलें हुई हैं। ऑस्ट्रेलिया ने किशोरों के सोशल मीडिया उपयोग पर आयु-सीमा तय करने की दिशा में कदम बढ़ाए हैं। फ्रांस ने स्कूलों में स्मार्टफोन प्रतिबंध लागू किया है। ब्रिटेन में भी स्कूलों में मोबाइल उपयोग को सीमित करने के लिए दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं। अमेरिका में सोशल मीडिया कंपनियों के विरुद्ध मुकदमे दायर हुए हैं और उनपर भारी जुर्माने लगाए गए हैं। इन पहलों का उद्देश्य तकनीक का विरोध नहीं, बल्कि बच्चों के मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य की रक्षा करना है।

वास्तव में स्मार्टफोन जहां वरदान है, वहीं अभिशाप भी है। इससे ज्ञान का भंडार भी उपलब्ध है और भ्रम का संसार भी। यह शिक्षा का माध्यम भी है और अश्लीलता तथा हिंसा का प्रवेश-द्वार भी। यह रोजगार के अवसर भी देता है और साइबर अपराध की राह भी खोलता है। आज अनेक युवा रातों-रात अमीर बनने की लालसा में साइबर ठगी, सेक्सटॉर्शन, ऑनलाइन जुआ और डिजिटल धोखाधड़ी जैसे अपराधों में फंस रहे हैं। सोशल मीडिया पर फैल रही अश्लील सामग्री, फेक न्यूज, नफरत और ट्रोल संस्कृति ने सामाजिक मूल्यों को गहरी चोट पहुंचाई है। सबसे अधिक चिंता का विषय बच्चों और किशोरों का मानसिक स्वास्थ्य है। शोध बताते हैं कि अत्यधिक स्क्रीन टाइम से बच्चों की एकाग्रता, स्मरण शक्ति और रचनात्मक क्षमता प्रभावित होती है। नींद में कमी, चिड़चिड़ापन, अवसाद, चिंता, आत्महत्या की प्रवृत्ति और सामाजिक अलगाव जैसी समस्याएं तेजी से बढ़ रही हैं। परिवारों में संवाद कम हुआ है और डिजिटल निकटता के बावजूद भावनात्मक दूरियां बढ़ी हैं। बच्चे खेल के मैदानों से दूर होकर

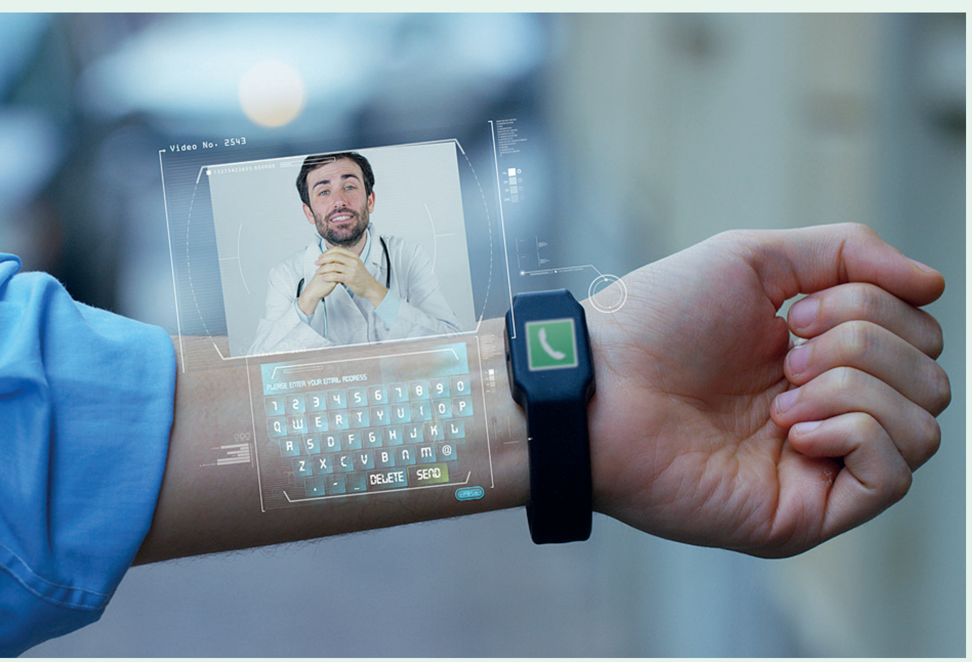

आभासी दुनिया में खोते जा रहे हैं।

विशेषतः 'स्मार्टफोन एक दुधारी तलवार है'। आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) और अत्याधुनिक संचार माध्यमों ने इस चुनौती को और अधिक जटिल बना दिया है। एआई जहां शिक्षा, चिकित्सा, अनुसंधान और प्रशासन के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव ला रही है, वहीं इसके दुरुपयोग की आशंकाएं भी तेजी से बढ़ रही हैं। डीपफेक वीडियो, फर्जी ऑडियो, साइबर ठगी, पहचान की चोरी, फेक न्यूज और डिजिटल ब्लैकमेल जैसे अपराधों में एआई का इस्तेमाल चिंताजनक स्तर तक बढ़ गया है। स्मार्टफोन इस पूरी प्रक्रिया का सबसे सुलभ और प्रभावी माध्यम बन गया है। एक साधारण मोबाइल फोन के माध्यम से आज कोई भी व्यक्ति एआई आधारित ऐप्लीकेशन का उपयोग कर नकली तस्वीरें और वीडियो तैयार कर सकता है, भ्रामक सूचनाएं फैला सकता है या साइबर अपराधों को अंजाम दे सकता है। विशेष रूप से किशोर और युवा, जिनके पास तकनीकी कौशल तो है लेकिन नैतिक प्रशिक्षण और परिपक्वता का अभाव है, वे अनजाने में अथवा त्वरित लाभ की लालसा में ऐसे कृत्यों में संलिप्त हो सकते हैं। इसलिए आवश्यक है कि एआई और स्मार्टफोन के उपयोग के साथ-साथ डिजिटल नैतिकता, मानवीय मूल्यों और कानूनी जिम्मेदारियों का भी समुचित प्रशिक्षण दिया जाए, ताकि तकनीक मानवता के विकास का साधन बने, विनाश का नहीं। इस संदर्भ में यह कथन अत्यंत प्रासंगिक है-'विज्ञान बिना विवेक के विनाश का कारण बनता है, जबकि विवेक के साथ वही विज्ञान मानवता का वरदान बन जाता है।'

ऐसी स्थिति में भारत में भी व्यापक राष्ट्रीय विमर्श की आवश्यकता है। भारत विश्व की सबसे युवा आबादी वाला देश है और एक विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में तेजी से अग्रसर है। यदि भारत को विश्वगुरु के रूप में अपनी भूमिका निभानी है, तो उसे तकनीक और मानवीय मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित करना होगा। भारत द्वारा निर्मित नीतियां न केवल देश, बल्कि विश्व के लिए भी मार्गदर्शक बन सकती हैं। इस दिशा में कुछ ठोस कदम उठाए जा सकते हैं- पहला, बच्चों और किशोरों के लिए स्मार्टफोन उपयोग की आयु-सीमा और समय-सीमा निर्धारित की

> **वास्तव में स्मार्टफोन जहां वरदान है, वहीं अभिशाप भी है। इससे ज्ञान का भंडार भी उपलब्ध है और भ्रम का संसार भी। यह शिक्षा का माध्यम भी है और अश्लीलता तथा हिंसा का प्रवेश-द्वार भी। यह रोजगार के अवसर भी देता है और साइबर अपराध की राह भी खोलता है।**

जाए। एक निश्चित आयु तक बच्चों को केवल आवश्यक और नियंत्रित डिजिटल सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं।

दूसरा, स्कूलों में साइबर साक्षरता और डिजिटल नैतिकता को पाठ्यक्रम का अनिवार्य हिस्सा बनाया जाए। बच्चों को केवल तकनीक का उपयोग ही नहीं, बल्कि उसके दुष्परिणामों और कानूनी पहलुओं की जानकारी भी दी जानी चाहिए। तीसरा, अभिभावकों को डिजिटल पैरेंटिंग का प्रशिक्षण दिया जाए। बच्चों को मोबाइल थमाकर जिम्मेदारी पूरी नहीं होती- उन्हें मार्गदर्शन, संवाद और संस्कार भी देने होंगे। चौथा, सोशल मीडिया कंपनियों की जवाबदेही सुनिश्चित की जाए। हानिकारक और अश्लील सामग्री पर प्रभावी नियंत्रण, आयु सत्यापन और एल्गोरिदम की पारदर्शिता सुनिश्चित की जानी चाहिए। पांचवां, युवाओं के लिए रोजगार, कौशल विकास और रचनात्मक अवसरों का विस्तार किया जाए, ताकि वे त्वरित धनार्जन के प्रलोभन में अपराध की ओर न बढ़ें।

भारतीय संस्कृति सदैव संयम की संस्कृति रही है। हमारे ऋषियों ने सिखाया है कि किसी भी साधन का मूल्य उसके उपयोग में निहित होता है। आग भोजन भी पका सकती है और घर भी जला सकती है- दोष आग का नहीं, उपयोगकर्ता का होता है। यही बात स्मार्टफोन पर भी लागू होती है। आज आवश्यकता डिजिटल दुनिया से कटने की नहीं, बल्कि डिजिटल जिम्मेदारी, साइबर साक्षरता और संयमित उपयोग की है। तकनीक का विरोध समाधान नहीं है, बल्कि उसके साथ नैतिकता, विवेक और मानवीय मूल्यों का समन्वय ही स्थायी समाधान है। स्मार्टफोन मानव की सेवा का साधन बने, मानव का स्वामी नहीं- इसी में व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का कल्याण निहित है। ■

प्रेम में डूबी एक अल्हड़ प्रेयसी और दूसरी परिपक्व संगिनी..!!

संजीव शर्मा

ऐसा लग रहा था जैसे किसी खूबसूरत श्वेत-वसना अल्हड़ युवती ने अपने गले में हीरे-मोतियों का अनुपम हार धारण कर लिया हो और वह अपने प्रेमी की अनंत प्रतीक्षा में बांहें फैलाकर आतुरता से ताका झांकी कर रही है क्योंकि पहाड़ों के गोल गोल रास्ते बार बार एक ही दृश्य हमारे सामने लाते रहते हैं। बस, इस दृश्य से हमारी दूरी कुछ कम ज्यादा होती रहती है।

धर्मशाला से मैकलोडगंज के लिए चढ़ते हुए आप कुछ ऐसा ही महसूस करते हैं जैसे पहाड़ झांक झांक कर आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। यहां बर्फ को हम श्वेतवासना युवती की पवित्रता और रोशनियों को उसकी मुस्कान कह सकते हैं। अपने प्रेमी (पर्यटक) के इंतजार में हर रात वह स्वयं को इस तरह के मनमोहक श्रृंगार से सजाती है।

दरअसल, जब हम धर्मशाला से मैकलोडगंज की ओर बढ़ रहे थे तब तक सूरज ढल चुका था और चांद की शह पाकर धौलाधार की ऊंची चोटियों पर बिछी बर्फ की सफेद चादर चांदी सी दमक रही थी और उसके नीचे मैकलोडगंज शहर की असंख्य रोशनियाँ जगमगा रहीं थीं।

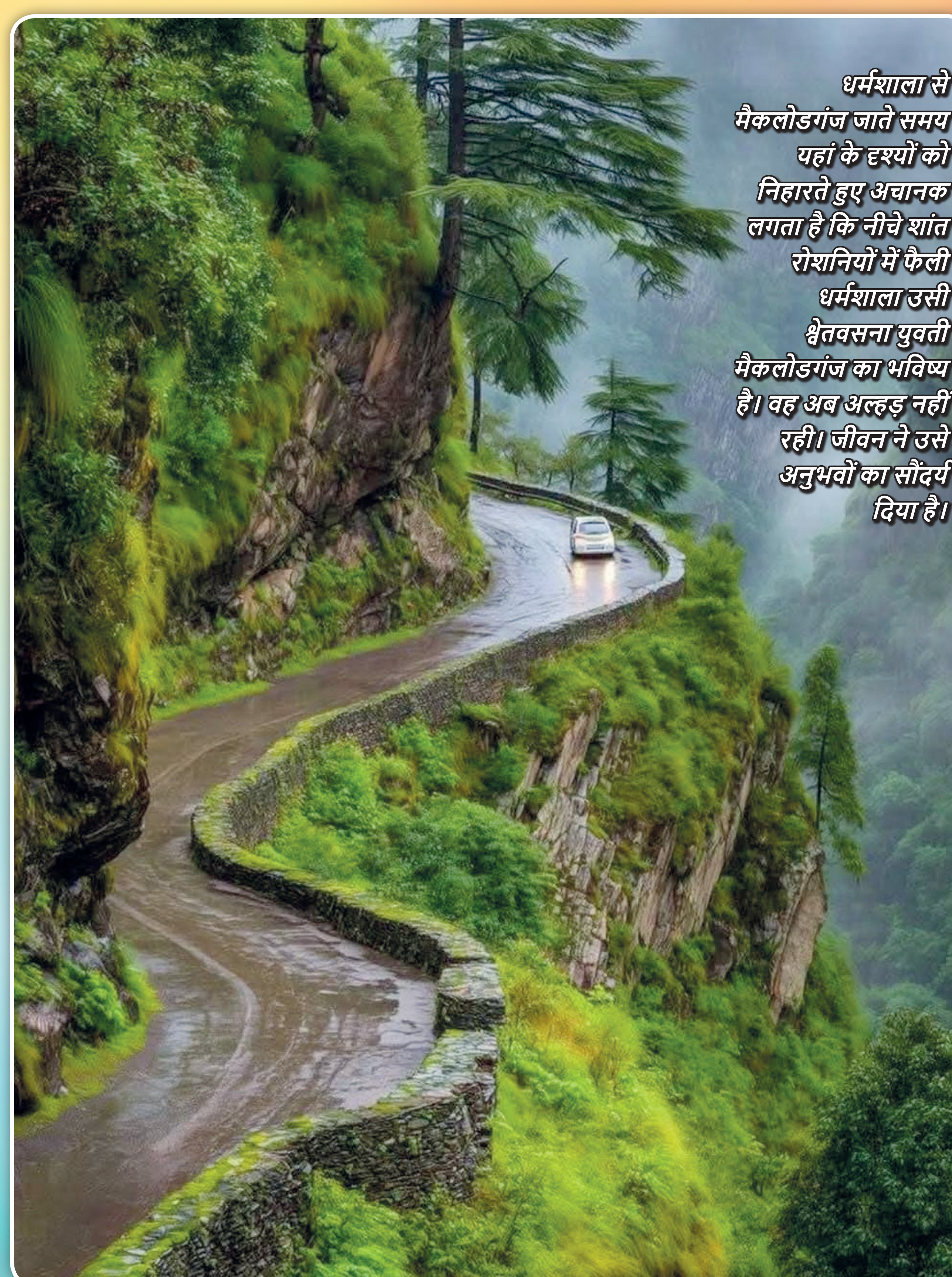

धर्मशाला से मैकलोडगंज जाते समय यहां के दृश्यों को निहारते हुए अचानक लगता है कि नीचे शांत रोशनियों में फैली धर्मशाला उसी श्वेतवसना युवती मैकलोडगंज का भविष्य है। वह अब अल्हड़ नहीं रही। जीवन ने उसे अनुभवों का सौंदर्य दिया है।

मैकलोडगंज के ठीक नीचे करीब 10 किमी की दूरी पर धर्मशाला है। जीवन के अनुभवों से समृद्ध, आत्मविश्वास से भरी, एक परिपक्व पत्नी की तरह। उसमें मैकलोडगंज जैसी चंचलता नहीं, बल्कि गहराई और धैर्य है। उसकी सड़कों पर पसरा सुकून, देवदार के वृक्षों की गंभीरता और पहाड़ों से उतरती शीतल हवा मानो कहती है कि प्रेम केवल आकर्षण नहीं, बल्कि विश्वास का दूसरा नाम है।

धर्मशाला से मैकलोडगंज जाते समय यहां के दृश्यों को निहारते हुए अचानक लगता है कि नीचे शांत रोशनियों में फैली धर्मशाला उसी श्वेतवसना युवती मैकलोडगंज का भविष्य है। वह अब अल्हड़ नहीं रही। जीवन ने उसे अनुभवों का सौंदर्य दिया है। वह एक परिपक्व पत्नी की तरह अपने घर के आंगन में उम्मीद का दीप जलाए बैठी है। उसे मालूम है कि प्रतीक्षा प्रेम का दूसरा नाम है। उसकी आंखों में ठहराव है, मुस्कान में अपनापन और मौन में गहरी आत्मीयता।

मैकलोडगंज और धर्मशाला का यही अंतर उन्हें एक-दूसरे का पूरक बनाता है। एक प्रेम का पहला स्पंदन है, दूसरा उसी प्रेम की स्थिर धड़कन। एक आकर्षण है, दूसरा अपनापन। एक स्वप्न है, दूसरा जीवन। धौलाधार इन दोनों के परस्पर प्रेम का साक्षी बनकर किसी ऋषि की तरह तपस्या में मग्न है। सदियों से वह प्रेम, विरह, मिलन और बिछोह के असंख्य दृश्य देखता आया है। उसकी चोटियां केवल बर्फ का विस्तार नहीं, समय की कसौटी हैं।

मैकलोडगंज और धर्मशालाहिमाचल की गोद में बसे इन दोनों अनूठे और प्राकृतिक रूप से बेहतरीन शहरों को धौलाधार पर्वत श्रृंखला अपनी मौन उपस्थिति से जोड़ती है। हाल ही में इन दोनों शहरों से रू-ब-रू होने का मौका मिला।

धौलाधार पर बिछी बर्फ़ की सफेद चादर पर जब सुबह सूरज की सुनहरी किरणें पड़ती हैं, तब लगता है जैसे किसी ने धौलाधार की चांदी सी धवल चादर पर सोने का रंग चढ़ा दिया हो और वह सुनहरी आभा से दमकने लगती हैं, लेकिन रात में वही बर्फ चांदनी के साथ मिलकर एक ऐसा दृश्य रचती है कि उसके सामने शब्द भी फीके पड़ जाते हैं।

जब हम मैकलोडगंज/ मक्लोडगंज/ मैक्लॉडगंज में प्रवेश करते हैं तो यहां की गलियों में कहीं तिब्बती संस्कृति की मधुर सुगंध महसूस होती है तो कहीं प्रार्थना चक्रों की ध्वनि से बिखरते मंत्र। हवा के साथ पंख फैलाकर अपनी आवाज से पर्यटकों को अपनी ओर खींचती रंग-बिरंगी छोटी बड़ी झंडियां सुकून की एक अलग ही दुनिया में ले जाती हैं।

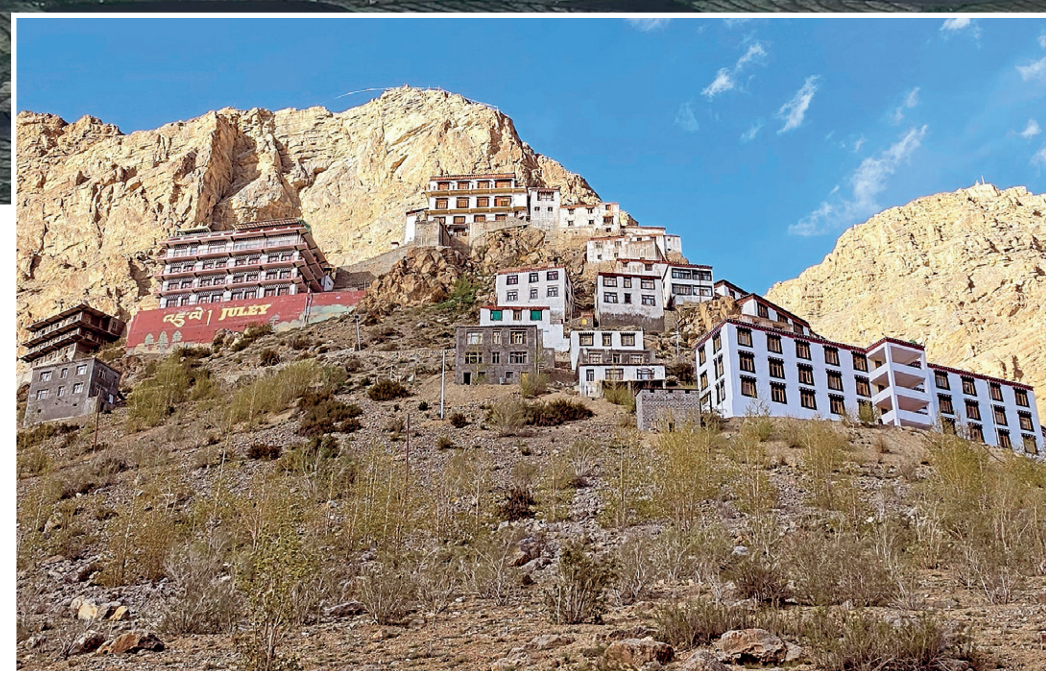

मैक्लॉडगंज तिब्बती संस्कृति का एक जीवंत कैनवास है, जहां आध्यात्मिकता, प्रकृति और मानवता का संगम होता है। इसे लिटिल ल्हासा भी कहा जाता है। धर्मगुरु हिज हॉलीनेस दलाई लामा की उपस्थिति ने इस स्थान को तिब्बती बौद्ध धर्म का वैश्विक केंद्र बना दिया है।

यहां की गलियों में प्रार्थना चक्र (प्रेयर व्हील्स) घुमाते हुए लाल और केसरिया वस्त्रों में लिपटे भिक्षु, अगरबत्ती की सुगंध और मंत्रों की गूंज एक अनूठा माहौल रचते हैं और यहां आप एक अलग दुनिया में होते हैं। यहां का वातावरण एवं आवोहवा हमारे शहरों से बिल्कुल अलग है, अनूठी है और आध्यात्मिक सुकून से भरी भी।

वहीं, धर्मशाला अपने विस्तृत आकाश, हरियाली और सहज जीवन-लय के साथ मन को स्थिर कर देती है। धर्मशाला अपनी शांत जीवनशैली, प्राकृतिक सौंदर्य और सांस्कृतिक विविधता के कारण देश-विदेश के पर्यटकों को समान रूप से आकर्षित करता है। धर्मशाला का हर कोना सादगी, सौम्यता और आत्मीयता का एहसास कराता है।

यहां की वादियों में बहती ठंडी हवाएं, पक्षियों का मधुर कलरव, देवदार की मोहक खुशबू और हरियाली से भरे पहाड़ मन को ऐसी शांति देते हैं, जो लंबे समय तक स्मृतियों में बनी रहती है। यहां सुविधाएं हैं, साधन हैं और शांति भी। दुनिया के सबसे खूबसूरत क्रिकेट स्टेडियम ने यहां के आकर्षण में चार चांद लगा दिए हैं। वैसे, यह मैकलोडगंज का प्रवेश द्वार भी है। इस साल ही महज मई जून में आठ लाख से ज्यादा लोग धौलाधार से वशीभूत होकर यहां आ चुके हैं।

सच्चाई भी यही है कि जो भी धौलाधार की इन वादियों में एक बार आता है, वह केवल तस्वीरें लेकर नहीं लौटता, वह अपने भीतर कुछ अनकहे भाव भी साथ ले जाता है। उसे महसूस होने लगता है कि पर्वत भी प्रेम करते हैं, बर्फ भी प्रतीक्षा करती है और रोशनियां भी किसी के आने की आशा में पूरी रात जागती हैं।

मैकलोडगंज और धर्मशाला.. केवल दो पर्यटन स्थल नहीं हैं। वे प्रेम और धैर्य, आकर्षण और विश्वास, यौवन और परिपक्वता की दो जीवंत कहानी हैं। धौलाधार की गोद में बसे ये दोनों शहर प्रकृति की ऐसी प्रेम-कथा रचते हैं, जिसे देखने वाला हर व्यक्ति अपने भीतर एक कवि, एक प्रेमी और एक यात्री सा महसूस करने लगता है। ■

चिन्मय दत्ता

शख्सीयतों का जीवन सदैव प्रेरणास्पद होता है। जन्मदिवस मनाने की परंपरा का आधार भी संभवतः यही है, ताकि लोग ऐसे लोगों के जीवन से परिचित हो सकें, जो उन्हें नई दिशा देने में सक्षम हैं। कुछ हस्तियां हैं, जो आज भी अपने प्रखर व्यक्तित्व से हमें प्रेरित कर रही हैं, तो कई महान शख्सीयतें से इस संसार से विदा लेकर भी हमें सदैव प्रेरित करती रहेंगी। जन्मदिवस विशेष के इस कॉलम में हम हर महीने प्रसिद्ध विभूतियों के बारे में संक्षिप्त जानकारी देने का प्रयास करते हैं। इनके जीवन के बारे में जानकर हम स्वयं को नई दिशा देने में सक्षम हो सकते हैं।

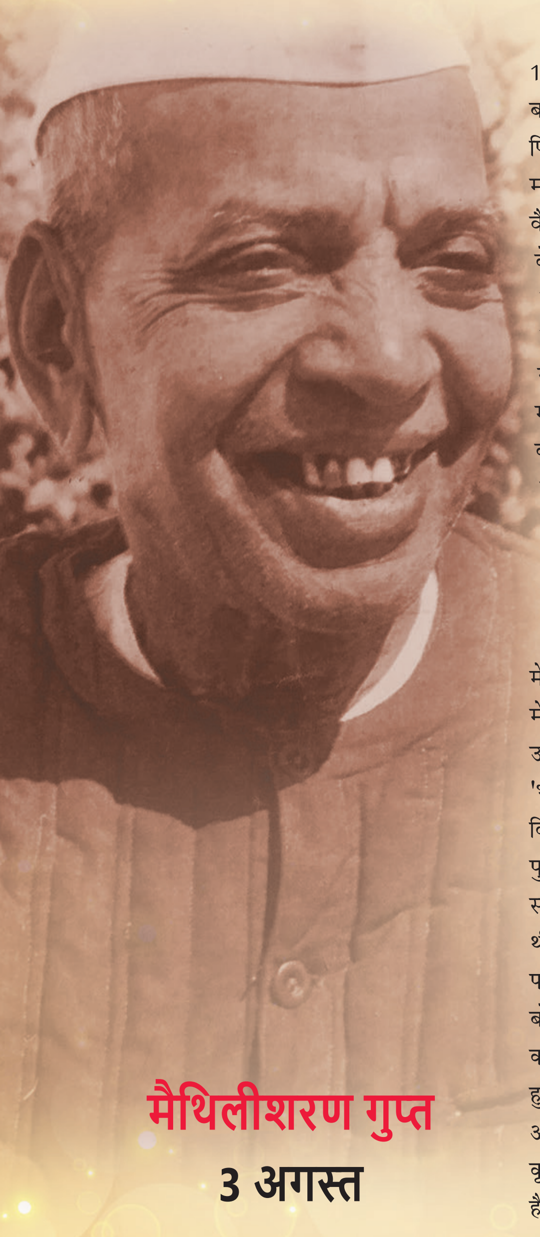

मैथिलीशरण गुप्त
3 अगस्त

प्रख्यात कवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म 3 अगस्त 1886 को झाँसी के निकट चिरगाँव में हुआ था। उनके बचपन का नाम 'मिथिलाधिप नंदनशरण' था। उनके पिता का नाम पिता सेठ रामचरण कनकने था। उनकी माँ का नाम काशी बाई था। माता और पिता दोनों ही वैष्णव थे। विद्यालय के खेलकूद में अधिक ध्यान देने के कारण मैथलीशरण गुप्त जी की पढ़ाई अधूरी रह गयी। रामस्वरूप शास्त्री, दुर्गादत्त पंत, आदि ने उन्हें विद्यालय में पढ़ाया। घर में ही उन्होने हिन्दी, बंगला, संस्कृत , साहित्य का अध्ययन किया। मुंशी अजमेरी जी ने उनका मार्गदर्शन किया। १२ वर्ष की उम्र में ब्रजभाषा में कनकलता नाम से कविता की रचना को इन्होने ने लिखना आरम्भ किया। वहाँ से आचार्य महावीर प्रसाद द्बिवेदी जी के सम्पर्क में आये। उनकी कवितायें खड़ी बोली में मासिक ''सरस्वती'' में प्रकाशित होना प्रारम्भ हो गई। धनाढ्य वैश्य घराने में जन्म लेने के कारण उनके नाम में 'गुप्त' शामिल हो गया। वह बचपन में 'स्वर्णलता' नाम से छप्पय लिखते थे, फिर किशोरावस्था में 'रसिकेश', 'रसिकेंदु' आदि नाम भी प्रयोग करने लगे। उन्होंने अनुवाद का कार्य 'मधुप' नाम से किया और 'भारतीय' और 'नित्यानंद' नाम से अँग्रेज़ सरकार के विरुद्ध कविताएँ लिखी। इसलिये साहित्य जगत उन्हें 'दद्दा' पुकारता था। उनकी कृति 'भारत-भारती' (1912) स्वतंत्रता संग्राम के समय व्यापक प्रभावशाली सिद्ध हुई थी और इसी कारण महात्मा गाँधी ने उन्हें 'राष्ट्रकवि' की पदवी भी दी थी। हिदी साहित्य के इतिहास में वह खड़ी बोली के प्रथम महत्त्वपूर्ण कवि माने जाते हैं। पद्य-रचना की ओर उनका झुकाव 'लघु सिद्धांत कौमुदी' पढ़ते हुए हुआ। आरंभ में ब्रजभाषा में उन्होने काव्य-सृजन भी किया और संस्कृत छंदों में अनेक अन्योक्तियाँ लिखी। उनकी कृतियों में देश का अतीत, वर्तमान और भविष्य बोलता है। वह मानववादी, नैतिक और सांस्कृतिक काव्यधारा के विशिष्ट कवि थे। उनके दो महाकाव्य, बीस खंडकाव्य, सत्रह गीतिकाव्य, चार नाटक और गीतिनाट्य, दो संस्मरणात्मक गद्य-कृतियाँ, चार निराख्यानक निबंध और अठारह अनूदित रचनाएँ उपलब्ध हैं। प्रमुख कृतियाँ प्रबंध-काव्य महाकाव्य : साकेत (1931) खंडकाव्य : रंग में भंग (1909), जयद्रथ-वध (1910), शकुंतला (1914), पंचवटी (1915), किसान (1916), सैरंध्री (1927), वकसंहार (1927), वन वैभव (1927), शक्ति (1927), यशोधरा (1932), द्बापर (1936), सिद्धराज (1936), नहुष (1940), कुणाल गीत (1941), कर्बला (1942), अजित (1946), हिडिबा (1950), विष्णुप्रिया (1957), रत्नावली (1960), उर्मिला (अप्रकाशित, 1908-09), कथाश्रित निबंध काव्य : पत्रावली (1916), विकट-भट (1928), गुरुकुल (1928), अर्जन और विसर्जन (1942), काबा (1942), प्रदक्षिणा (1950), युद्ध (1950), कवि श्री (1955), नल दमयंती (अप्रकाशित, 1910-11), निबंध-काव्य : भारत-भारती (1912), हिदू (1927), राजा-प्रजा (1956), विजय पर्व (1963), नाटक : पद्य नाटक : अनघ, दिवोदास, पृथ्वीपुत्र, जयिनी, लीला गद्य नाटक : तिलोत्तमा, चंद्रहास, उद्धार, अनुवाद : संस्कृत से अनूदित : स्वप्न वासवदत्ता, गीतामृत, दूत घटोत्कच, अविमारक, प्रतिमा, अभिषेक, उरुभंग आदि। बांग्ला से अनूदित : विरहिणी ब्रजांगना, पलासी का युद्ध, वीरांगना, मेघनाद वध, वृत्र संहार उनके समस्त रचनाकर्म को 'मैथिलीशरण गुप्त ग्रंथावली' के 12 खंडों में संकलित करने का प्रयास किया गया है। उन्हें 'साकेत' के लिए मंगला प्रसाद पारितोषिक प्रदान किया गया। राष्ट्रपति ने उन्हें राज्यसभा का सदस्य मनोनीत किया था। भारत सरकार ने उन्हें 'पद्म भूषण' से अलंकृत किया। उनकी जयंती 3 अगस्त को हर वर्ष 'कवि दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

एम. एस. स्वामीनाथन
7 अगस्त

बलराम के कंधे पर हल इस तथ्य को प्रमाणित करती है कि भारत युगो से कृषि प्रधान देश है इतिहास का अवलोकन किया जाए तो ब्रिटिश शासन काल तक फसलों की उन्नति के लिए बीजों की सुधार की ओर किसी का ध्यान नहीं गया था। भारत के प्रसिद्ध कृषि अनुवांशिक वैज्ञानिक मंकोम्बो सम्बासीवन स्वामीनाथन पहले व्यक्ति थे जिन्होंने सबसे पहले 1966 में मैक्सिको के बीजों को पंजाब की घरेलू किस्मों के साथ मिश्रित करके उच्च उत्पादकता वाले गेहूं के संकर बीज विकसित किए। इससे भारत में गेहूं उत्पादन में भारी वृद्धि हुई, इसलिए एम.एस. स्वामीनाथन को हरित क्रांति का जनक माना जाता है। एम.एस. स्वामीनाथन का जन्म 7 अगस्त 1925 को तमिलनाडु स्थित कुंभकोणम में हुआ था। कृषि क्षेत्र में इनकी उपलब्धियों के लिये भारत सरकार द्बारा सन 1967 में पद्म श्री, 1972 में पद्म भूषण और 1989 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था। अमेरिका, जापान, फ्रांस, यूनेस्को, इंग्लैंड, बांग्लादेश, चीन, इटली जैसे कई राष्ट्रों ने भी इन्हें सम्मानित किया है। विभिन्न पुरस्कारों में और सम्मान के साथ प्राप्त धनराशि से इन्होंने 1990 के दशक के आरंभिक वर्षों में अवलंबनीय कृषि तथा ग्रामीण विकास के लिए चेन्नई में शोध केंद्र 'एम.एस. स्वामीनाथन रिसर्च फाउंडेशन' की स्थापना की। इस फाउंडेशन का मुख्य उद्देश्य 'भारतीय गांवों में प्रकृति तथा महिलाओं के लिए अनुकूल प्रौद्योगिकी के विकास और प्रसार पर आधारित रोजगार उपलब्ध कराने वाली आर्थिक विकास की रणनीति को बढ़ावा देना है।' 1999 में टाइम पत्रिका ने स्वामीनाथन को 20वीं सदी के 20 सबसे प्रभावशाली एशियाई व्यक्तियों में से एक बताया है।

श्रीदेवी 13 अगस्त

13 अगस्त 1963 को तमिलनाडु के शिवकाशी में अय्यपन यंगर और राजेश्वरी यंगर के घर श्री अम्मा अय्यप्पन यंगर का जन्म हुआ। चार साल की उम्र में इन्होंने तमिल फिल्म 'कंधन करुनी' बाल कलाकार के रूप में अपने फिल्मी करियर की शुरुआत की। फिर हिदी फिल्म इंडस्ट्री में हवाहवाई गर्ल के नाम से मशहूर यह अभिनेत्री श्रीदेवी के नाम से प्रसिद्ध हुई। श्रीदेवी ने 1975 की फिल्म 'जूली' से बाल अभिनेत्री के रूप में हिदी सिनेमा में प्रवेश किया जिसके बाद बतौर मुख्य अभिनेत्री 1978 की 'सोलहवां सावन' से की परंतु इन्हें सफलता 1983 की 'हिम्मतवाला' से मिली। 1986 की 'नगीना' में नागिन की भूमिका के बाद 1987 की हिदी भाषा की विज्ञान कथा फिल्म 'मिस्टर इंडिया' में हवाहवाई गर्ल अब भी प्रासंगिक है। एक के बाद एक सुपर हिट महिला प्रधान फिल्मों की वजह से श्रदेवी को भारतीय सिनेमा की पहली 'महिला सुपरस्टार' कहा जाने लगा। इस अभिनेत्री ने पांच फिल्म फ़ेयर अवार्ड अपने नाम किया। इसके अतिरिक्त 2013 में भारत सरकार ने इन्हें पद्मश्री से विभूषित किया। इन्होंने तमिल, मलयालम, तेलुगु, कन्नड़ और हिदी सिनेमाओं में काम किया है। 2005 में यह एक टीवी शो 'काबूम' में जज के रूप में शामिल हुई फिर 2012 में हिदी सिनेमा 'इंग्लिश विग्लिश' में नजर आई। इसके बाद 2017 में बतौर मुख्य कलाकार इनकी फिल्म 'मॉम' आई। 24 फरवरी 2018 को संयुक्त अरब अमीरात स्थित दुबई में इनका देहांत हो गया।

सावन महीना भोलेनाथ के भक्तों के लिये पर्व के महीने की तरह आता है। इस पवित्र मास की शुरुआत होते ही बिहार, झारखंड तथा आसपास के राज्यों के हिन्दु भक्तों के बीच बाबा बैद्यनाथ मंदिर देवघर जाने की होड़ लग जाती है। भागलपुर के पास स्थित सुल्तानगंज से देवघर स्थित वैद्यनाथ मंदिर की दूरी लगभग 105 कि0मी0 है लेकिन बोल बम-बोल बम के जयघोष के साथ पूरा एक महीना ऐसा लगता है जैसे उस 105 कि0मी0 की दूरी में हरेक जगह कांवड़ लिये कांवड़िये तथा डाक बम कांवड़िये के बीच मानो होड़ लगी हो कि जल्द से जल्द बाबा भोलेनाथ के दर्शन हो जाये तथा जीवन सार्थक हो जाये।

ज्योतिर्लिंग का पुराणकालीन वैद्यनाथ मन्दिर

उदयराज सिंह

द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक वैद्यनाथ मन्दिर ज्योतिर्लिंग का पुराणकालीन मन्दिर है जो भारतवर्ष के राज्य झारखंड में अतिप्रसिद्ध देवघर नामक स्थान पर स्थित है। देवघर झारखंड राज्य का एक जिला भी है। पवित्र तीर्थ होने के कारण लोग इसे वैद्यनाथ धाम भी कहते हैं। जहाँ यह मन्दिर स्थित है उस स्थान को देवघर अर्थात देवताओं का घर कहते हैं, क्योंकि भगवान शिव देवों के देव है तथा वैद्यनाथ मंदिर भगवान शिव का मंदिर है, जहां देवों के देव देवाधिदेव वास करते हों वहां बाकी सारे देवता तो आयेंगे ही। इसीलिये यह स्थान देवघर कहलाता है। यह ज्योतिर्लिंग एक सिद्धपीठ है। कहा जाता है कि यहाँ पर आने वालों की सारी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। इस कारण इस लिंग को कामना लिंग भी कहा जाता है।

सावन महीना भोलेनाथ के भक्तों के लिये पर्व के महीने की तरह आता है। इस पवित्र मास की शुरुआत होते ही बिहार, झारखंड तथा आसपास के राज्यों के हिन्दु भक्तों के बीच बाबा बैद्यनाथ मंदिर देवघर जाने की होड़ लग जाती है। भागलपुर के पास स्थित सुल्तानगंज से देवघर स्थित वैद्यनाथ मंदिर की दूरी लगभग 105 कि0मी0 है लेकिन बोल बम-बोल बम के जयघोष के साथ पूरा एक महीना ऐसा लगता है जैसे उस 105 कि0मी0 की दूरी में हरेक जगह कांवड़ लिये कांवड़िये तथा डाक बम कांवड़िये के बीच मानो होड़ लगी हो कि जल्द से जल्द बाबा भोलेनाथ के दर्शन हो जाये तथा जीवन सार्थक हो जाये। बिहार तथा झारखंड सरकार की ओर से भी इस एक माह तक उचित सरकारी व्यवस्था की जाती है ताकि रास्ते में किसी भी कांवड़ियों व तीर्थयात्रियों को परेशानी कांवड़ियों व तीर्थयात्रियों को न हो। सबकी एक अभिलाषा होती है कि जीवन में एक बार बाबा वैद्यनाथ मंदिर में जल चढ़ाना है तथा भोले बाबा के दर्शन करना है।

स्थापना की कथा

इस लिंग की स्थापना का इतिहास यह है कि जनश्रुति के अनुसार एक बार राक्षसराज रावण ने हिमालय पर जाकर शिवजी की प्रसन्नता के लिये घोर तपस्या की और अपने सिर काट-काटकर शिवलिंग पर चढ़ाने शुरू कर दिये। एक-एक करके नौ सिर चढ़ाने के बाद दसवाँ सिर भी काटने को ही था कि शिवजी प्रसन्न होकर प्रकट हो गये। उन्होंने उसके दसों सिर ज्यों-के-त्यों कर दिये और उससे वरदान माँगने को कहा। रावण ने लंका में जाकर उस लिंग को स्थापित करने के लिये उसे ले जाने की आज्ञा माँगी। शिवजी ठहरे अवघरदानी इसलिये अनुमति दे दी, पर इस चेतावनी के साथ दी कि यदि मार्ग में इसे पृथ्वी पर रख देगा तो वह वहीं अचल हो जाएगा। अन्ततोगत्वा वही हुआ। रावण शिवलिंग लेकर चला पर मार्ग में एक चिताभूमि आने पर उसे लघुशंका निवृत्ति की आवश्यकता हुई। रावण उस लिंग को एक मुसाफिर को थमा लघुशंका-निवृत्ति करने चला गया। इधर उस मुसाफिर को भी दैवयोग से वह लिंग इतना भारी लगा कि उसे संभाल नहीं सका तथा रावण के आने से पहले ही उस लिंग को धरती पर रखकर कहीं चला गया। लौटने पर रावण पूरी शक्ति लगाकर भी उसे न उखाड़ सका और निराश होकर मूर्ति पर अपना अँगूठा गड़ाकर लंका को चला गया। इधर ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताओं ने आकर उस शिवलिंग की पूजा की। शिवजी के दर्शन होते ही सभी देवी-देवताओं ने शिवलिंग की वहीं उसी स्थान पर प्रतिस्थापना कर दी और शिव-स्तुति करते हुए वापस स्वर्ग को चले गये। जनश्रुति व लोक-मान्यता के अनुसार यह वैद्यनाथ-ज्योतिर्लिंग मनोवांछित फल देने वाला है।

बैद्यनाथ धाम की पवित्र यात्रा श्रावण मास (जुलाई-अगस्त) में शुरु होती है जो कि पूरे एक माह तक चलती है। सबसे पहले तीर्थ यात्री सुल्तानगंज में एकत्र होते हैं जहाँ वे अपने-अपने पात्रों में पवित्र गंगाजल भरते हैं। इसके बाद वे गंगाजल को अपने-अपने काँवड़ में रखकर बैद्यनाथ धाम और बासुकीनाथ की ओर बढ़ते हैं। पवित्र जल लेकर जाते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि वह पात्र जिसमें जल है, वह कहीं भी भूमि से न सटे।

मन्दिर के मुख्य आकर्षण

देवघर का शाब्दिक अर्थ है देवी-देवताओं का निवास स्थान। देवघर में बाबा भोलेनाथ का अत्यन्त पवित्र और भव्य मन्दिर स्थित है। हर साल सावन के महीने में श्रावण मेला लगता है जिसमें लाखों श्रद्धालु बोल-बम, बोल-बम का जयकारा लगाते हुए बाबा भोलेनाथ के दर्शन करने आते है। ये सभी श्रद्धालु सुल्तानगंज से पवित्र गंगा जल लेकर लगभग 105 किलोमीटर की अत्यन्त कठिन पैदल यात्रा कर बाबा को जल चढ़ाते हैं। दो तरह के कांवड़िये होते हैं। एक वो जो जल को लेकर 2-3 दिनों में विश्राम करते हुये बाबा के मंदिर में जल चढ़ाते हैं लेकिन इस बात का खास ध्यान रखा जाता है कि वो कांवड़ जमीन पर कहीं भी नहीं छुने पाये अन्यथा उसकी यात्रा निश्फल मानी जाती है तथा दूसरे प्रकार के भक्त वो होते हैं जिन्हे डाक बम कहा जाता है। इस प्रकार के कांवड़िये एक बार सुल्तान गंज से जल लेकर बिना कहीं रुके 24 घंटे के अंदर ही वैद्यनाथ मंदिर जाकर बाबा भोलेनाथ के उपर जलाभिषेक करते हैं।

मन्दिर के समीप ही एक विशाल तालाब भी स्थित है। बाबा बैद्यनाथ का मुख्य मन्दिर सबसे पुराना है जिसके आसपास अनेक अन्य मन्दिर भी बने हुए हैं। बाबा भोलेनाथ का मन्दिर माँ पार्वती जी के मन्दिर से जुड़ा है।

पवित्र यात्रा

बैद्यनाथ धाम की पवित्र यात्रा श्रावण मास (जुलाई-अगस्त) में शुरु होती है जो कि पूरे एक माह तक चलती है। सबसे पहले तीर्थ यात्री सुल्तानगंज में एकत्र होते हैं जहाँ वे अपने-अपने पात्रों में पवित्र गंगाजल भरते हैं। इसके बाद वे गंगाजल को अपने-अपने काँवड़ में रखकर बैद्यनाथ धाम और बासुकीनाथ की ओर बढ़ते हैं। पवित्र जल लेकर जाते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि वह पात्र जिसमें जल है, वह कहीं भी भूमि से न सटे।

बैजू मन्दिर

बाबा बैद्यनाथ मन्दिर परिसर के पश्चिम में देवघर के मुख्य बाजार में तीन और मन्दिर भी हैं। इन्हें बैजू मन्दिर के नाम से जाना जाता है। इन मन्दिरों का निर्माण बाबा बैद्यनाथ मन्दिर के मुख्य पुजारी के वंशजों ने किसी जमाने में करवाया था। प्रत्येक मन्दिर में भगवान शिव का लिंग स्थापित है। जनश्रुति के अनुसार रावण के लंका जाने के पश्चात् सभी देवी-देवता आकर भगवान शिव की पूजा अर्चना करने के पश्चात् स्वर्ग सिधार गये तथा वह जगह विरान हो गया। एक दिन एक चरवाहा जिसका नाम बैजू था उसी जगह पर अपने जानवरों को चरा रहा था जहाँ भगवान शिव ने उसे दर्शन दिये। अपने घर जाकर बैजू ने सबको यह बात बतायी तथा उसी दिन से वहां पर पूजा अर्चना करने लगा। घोर लगन व परिश्रम से वहां एक भव्य मंदिर की स्थापना हो गयी। पहले इस मंदिर का नाम बैजुनाथ उसी चरवाहे के नाम पर था लेकिन कालांतर में वैद्यनाथ धाम हो गया।

वासुकिनाथ मन्दिर

वासुकिनाथ अपने शिव मन्दिर के लिये जाना जाता है। वैद्यनाथ मन्दिर की यात्रा तब तक अधूरी मानी जाती है जब तक वासुकिनाथ में दर्शन नहीं

किये जाते। यह मन्दिर देवघर से 42 किलोमीटर दूर जरमुण्डी गाँव के पास स्थित है। यहाँ पर स्थानीय कला के विभिन्न रूपों को देखा जा सकता है। वासुकिनाथ मन्दिर परिसर में कई अन्य छोटे-छोटे मन्दिर भी हैं।

वैद्यनाथधाम में महाशिवरात्रि व पंचशूल की पूजा

भारत के 12 ज्योतिर्लिंगों में झारखण्ड के देवघर जिले में स्थित वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग शामिल है। ऐसा देखा गया है कि विश्व के प्रायः सभी शिव मंदिरों के शीर्ष पर त्रिशूल लगा दिखता है मगर वैद्यनाथधाम परिसर के शिव, पार्वती, लक्ष्मी-नारायण व अन्य सभी मंदिरों के शीर्ष पर पंचशूल लगे हैं। इसके बारे में कहा जाता है कि रावण पंचशूल से ही अपने राज्य लंका की सुरक्षा करता था। चूंकि वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग को लंका ले जाने के लिए कैलाश से रावण ही लेकर आया था अतः यहां के सभी देवताओ के मंदिरों के उपर पंचशूल लगे हैं।

यहाँ प्रतिवर्ष महाशिवरात्रि से 2 दिन पूर्व बाबा मंदिर, माँ पार्वती व लक्ष्मी-नारायण के मंदिरों से पंचशूल उतारे जाते हैं। इस दौरान पंचशूल को स्पर्श करने के लिए भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ती है। वैद्यनाथधाम परिसर में स्थित अन्य मंदिरों के शीर्ष पर स्थित पंचशूलों को महाशिवरात्रि के कुछ दिनों पूर्व ही उतार लिया जाता है। सभी पंचशूलों को नीचे लाकर महाशिवरात्रि से एक दिन पूर्व विशेष रूप से उनकी पूजा की जाती है और तब सभी पंचशूलों को मंदिरों पर यथास्थान स्थापित कर दिया जाता है। इस दौरान बाबा व पार्वती मंदिरों के गठबंधन को हटा दिया जाता है। महाशिवरात्रि के दिन नया गठबंधन किया जाता है। गठबंधन के लाल पवित्र कपड़े को प्राप्त करने के लिए भी भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ती है। महाशिवरात्रि के दौरान बहुत-से श्रद्धालु सुल्तानगंज से कांवड़ में गंगाजल भरकर 105 किलोमीटर पैदल चलकर और बोल बम का जयघोष करते हुए वैद्यनाथधाम पहुंचते हैं। वैसे तो भक्त देवघर सालों भर पूजा अर्चना के लिये जाते है लेकिन प्रत्येक साल के सावन में तो उसकी छटा ही निराली होती है। हर तरफ बोल बम का जयकारा होता है, तथा भक्तों की भीड़ लाखों की संख्या में हुजूम के साथ इस प्रकार टूटती है कि पूरे सावन माह प्रशाषनिक अधिकारियों के साथ-साथ मंदिर की देख-रेख करने वाले पदाधिकारियों की सांसें अटकी रहती है कि कहीं कोई अनहोनी न हो जाये लेकिन जहां देवाधिदेव भोले शंकर वास करते हों तो वहां कैसी अव्यवस्था। सारी अव्यवस्थाओं को भुलाकर लोग भोले शंकर में लीन हो जाना चाहते हैं। ■

क्या समाज संवेदनहीनता की ओर बढ़ रहा है?

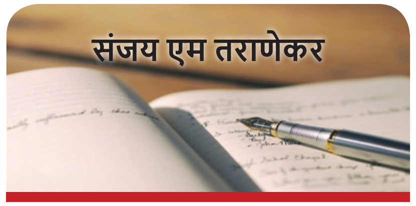

संजय एम तराणेकर

समाज की पहचान उसकी ऊँची इमारतों, चौड़ी सड़कों, बढ़ती अर्थव्यवस्था या आधुनिक तकनीक से नहीं होती। किसी भी सभ्यता का वास्तविक मूल्यांकन इस बात से किया जाता है कि वह अपने बुजुर्गों, अपने माता-पिता और अपने रिश्तों के साथ कैसा व्यवहार करती है। जब कोई पिता, जिसने पूरी उम्र अपने बच्चों के लिए संघर्ष किया, अपनी अंतिम यात्रा में अपनी ही संतान की प्रतीक्षा करता रह जाए, तब यह केवल एक परिवार का दुःख नहीं रहता; यह पूरे समाज की संवेदनहीनता का दस्तावेज़ बन जाता है।

हाल में सामने आई घटना, जिसमें एक वृद्ध पिता ने वृद्धाश्रम में अंतिम सांस ली और उनकी बेटियाँ अंतिम संस्कार में उपस्थित नहीं हुईं, बल्कि किसी ने पैसे भेजे और किसी ने वीडियो कॉल पर अंतिम संस्कार देखने की बात कही - यह समाचार पढ़कर मन अंदर तक विचलित हो जाता है। यह दृश्य केवल एक व्यक्ति की मृत्यु का नहीं, बल्कि रिश्तों की मरती हुई आत्मा का प्रतीक प्रतीत होता है।

हम ऐसे समय में जी रहे हैं जहाँ हर सुविधा हमारी मुट्ठी में है। एक क्लिक पर पैसा भेजा जा सकता है, वीडियो कॉल की जा सकती है, दुनिया के किसी भी कोने से जुड़ा जा सकता है। लेकिन विडंबना देखिए कि तकनीक ने दूरी तो घटा दी, पर दिलों के बीच की दूरियाँ बढ़ा दीं। आज बच्चों के पास माता-पिता के लिए महँगे उपहार हैं, लेकिन उनके साथ बैठने के लिए कुछ घंटे नहीं हैं। बैंक खाते भर गए हैं, लेकिन घरों के आँगन खाली हो गए हैं।

एक पिता अपने बच्चों के लिए क्या नहीं करता? वह अपनी इच्छाओं का गला घोंट देता है ताकि बच्चों के सपनों को पंख मिल सकें। वह अपनी भूख छिपाकर बच्चों का पेट भरता है। अपनी थकान छिपाकर उनके भविष्य की नींव रखता है। वह अपने जीवन का हर संघर्ष इस विश्वास के साथ करता है कि बुढ़ापे में उसके अपने ही उसके साथ खड़े होंगे। लेकिन यदि वही संतान अंतिम समय में केवल ऑनलाइन पैसे भेजकर अपना दायित्व पूरा समझने लगे, तो इससे अधिक पीड़ादायक विडंबना क्या हो सकती है?

यहाँ यह भी स्वीकार करना आवश्यक है कि किसी भी घटना के पीछे ऐसे कारण हो सकते हैं जो सार्वजनिक रूप से ज्ञात न हों। पारिवारिक संबंध जटिल हो सकते हैं, परिस्थितियाँ अलग-अलग हो सकती हैं। इसलिए किसी समाचार के आधार पर किसी व्यक्ति या परिवार का अंतिम नैतिक निर्णय देना उचित नहीं होगा। लेकिन इस घटना ने जिस सामाजिक प्रश्न को जन्म दिया है, वह अत्यंत गंभीर है - क्या हम धीरे-धीरे रिश्तों को भावनाओं से नहीं, बल्कि लेन-देन से मापने लगे हैं?

आज की शिक्षा हमें सफल पेशेवर तो बना रही है, लेकिन क्या वह हमें अच्छा बेटा, अच्छी बेटी और अच्छा इंसान भी बना रही है? डिग्रियाँ बढ़ रही हैं, लेकिन संस्कार सिकुड़ते जा रहे हैं। करियर की ऊँचाइयाँ छूने की दौड़ में परिवार पीछे छूट रहा है। माता-पिता अब जीवन के केंद्र में नहीं, बल्कि "समय मिलने पर याद करने योग्य" सूची में शामिल होते जा रहे हैं।

वृद्धाश्रमों की बढ़ती संख्या भी इसी बदलते समाज की कहानी कहती है। कभी वृद्धाश्रम उन लोगों के लिए होते थे जिनका इस दुनिया में कोई नहीं होता था। आज वहाँ ऐसे माता-पिता भी पहुँच रहे हैं जिनके बच्चे प्रतिष्ठित नौकरियों में हैं, विदेशों में रहते हैं, आर्थिक रूप से सम्पन्न हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि गरीबी बढ़ी है; इसका अर्थ यह है कि भावनात्मक गरीबी बढ़ी है।

हम यह भी भूलते जा रहे हैं कि बच्चे वही सीखते हैं जो वे अपने घर में देखते हैं। यदि आज कोई अपनी वृद्ध माँ या पिता की उपेक्षा करता है, तो वह अनजाने में अपनी अगली पीढ़ी को भी यही पाठ पढ़ा रहा है। समय का चक्र बड़ा न्यायप्रिय होता है। जो व्यवहार हम अपने माता-पिता के साथ करते हैं, वही किसी न किसी

आज की शिक्षा हमें सफल पेशेवर तो बना रही है, लेकिन क्या वह हमें अच्छा बेटा, अच्छी बेटी और अच्छा इंसान भी बना रही है? डिग्रियाँ बढ़ रही हैं, लेकिन संस्कार सिकुड़ते जा रहे हैं। करियर की ऊँचाइयाँ छूने की दौड़ में परिवार पीछे छूट रहा है।

रूप में हमारे सामने लौटकर आता है।

भारतीय संस्कृति में माता-पिता को देवतुल्य माना गया है। यह केवल धार्मिक वाक्य नहीं, बल्कि जीवन का गहरा दर्शन है। माता-पिता के प्रति सम्मान केवल उनके जीवित रहने तक सीमित नहीं होता; उनकी अंतिम यात्रा में कंधा देना भी हमारी संस्कृति में सबसे बड़ा पुत्रधर्म और पुत्रीधर्म माना गया है। अंतिम संस्कार केवल एक धार्मिक क्रिया नहीं, बल्कि जीवनभर के ऋण के प्रति कृतज्ञता का अंतिम प्रणाम है। इसे किसी वीडियो कॉल या ऑनलाइन भुगतान से प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकता।

यहाँ हम किसी एक परिवार की आलोचना करने के लिए नहीं कह रहें बल्कि यह पूरे समाज को आईना दिखाने का प्रयास है। हमें स्वयं से पूछना चाहिए—क्या हम भी कहीं अपने माता-पिता को केवल आर्थिक सहायता देकर अपने दायित्व की इतिश्री तो नहीं मान बैठे? क्या हमने कभी उनके साथ बैठकर बिना किसी स्वार्थ के समय बिताया? क्या हमने उनके अकेलेपन को समझने का प्रयास किया?

जीवन की सबसे बड़ी सच्चाई यह है कि धन, पद, प्रतिष्ठा और सफलता सब यहीं रह जाते हैं। अंत में याद रहती है केवल इंसानियत और रिश्तों की गर्माहट। जिस दिन माता-पिता इस दुनिया से विदा हो जाते हैं, उस दिन पछतावे के आँसू उन्हें वापस नहीं ला सकते। इसलिए जब तक वे हमारे बीच हैं, उनके साथ समय बिताइए, उनका सम्मान कीजिए, उनकी बातें सुनिए और उन्हें यह एहसास कराइए कि वे अकेले नहीं हैं।

क्योंकि जिस दिन किसी पिता की चिता के सामने उसकी संतान की जगह केवल मोबाइल की स्क्रीन दिखाई देने लगेगी, उस दिन यह समझ लेना चाहिए कि तकनीक जीत गई है, लेकिन इंसान हार गया है। विकास की चमक ने संवेदनाओं की लौ को ढक दिया है, और यदि हमने समय रहते इसे नहीं संभाला, तो आने वाली पीढ़ियाँ हमें आधुनिक तो कहेंगी, लेकिन मानवीय नहीं।

हमें यह ध्यान रखना होगा कि माता-पिता को जीवन भर आपके पैसों की नहीं, आपकी उपस्थिति की आवश्यकता होती है। उनकी अंतिम यात्रा में दो कदम साथ चलना किसी पर उपकार नहीं, बल्कि उस ऋण का छोटा-सा प्रतिदान है जिसे कोई संतान जीवन भर भी नहीं चुका सकती। ■

चौदह अगस्त को होगी रिलीज

अनंत

मशहूर सिने अभिनेता सनी देओल ने कहा कि उनकी जल्द आने वाली फिल्म 'बंटवारा 1947' दर्शकों को यह एहसास कराएगी कि इंसानियत से बढ़कर कुछ नहीं है। इसके साथ ही उन्होंने युवाओं से अपील की कि वे बंटवारे की मानवीय भावनाओं को महसूस करने के लिए इसे जरूर देखें। सनी देओल अपने बेटे करण देओल और अभिनेत्री प्रीति जिंटा के साथ शुक्रवार को लखनऊ में अपनी फिल्म का प्रमोशन करने पहुंचे थे।

यह फिल्म 14 अगस्त को रिलीज होने वाली है। आमिर खान प्रोडक्शंस द्वारा निर्मित और राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता निर्देशक राजकुमार संतोषी द्वारा निर्देशित यह फिल्म हिंदी के मशहूर साहित्यकार प्रोफेसर असगर वजाहत के नाटक 'जिस लाहौर नई वेख्या ओ जम्याई नई' पर आधारित है। 'जिस लाहौर नई वेख्या ओ जम्याई नई' मतलब है 'जिसने लाहौर नहीं देखा, उसने मानो जन्म ही नहीं लिया यानी उसने कुछ नहीं देखा'।

यह साफ करते हुए कि यह फिल्म उनकी 2001 की ब्लॉकबस्टर फिल्म 'गदर: एक प्रेम कथा' से अलग है, जो भारत-पाकिस्तान के रिश्तों और बंटवारे की पृष्ठभूमि पर बनी थी। देओल ने कहा कि पिछली फिल्म मुख्य रूप से एक प्रेम कहानी थी। पत्रकारों से बातचीत के दौरान देओल ने कहा, ''फिल्म 'गदर' बंटवारे के समय की एक खूबसूरत प्रेम कहानी थी, लेकिन वह पूरी तरह से एक प्रेम कहानी थी। 'बंटवारा 1947' उपन्यास 'जिस लाहौर नई वेख्या ओ जम्याई नई' पर आधारित है, जिसे राजकुमार संतोषी ने फिल्म के लिए रूपांतरित किया है।''

उन्होंने कहा, अगर आपको ट्रेलर पसंद आया, तो मैं बस इतना ही कह सकता हूं कि आपको फिल्म भी पसंद आएगी। संतोषी के साथ अपने लंबे जुड़ाव को याद करते हुए देओल ने कहा कि उनका साथ घायल से शुरू हुआ और दामिनी और घातक तक जारी रहा। ये सभी 1990 के दशक की सफल फ़िल्में थीं।

उन्होंने कहा, ''राजकुमार संतोषी और मैंने साथ में बहुत अच्छा काम किया है। हमारा सफ़र घायल से शुरू हुआ, जिसके बाद दामिनी और फिर घातक बनी। इन्हीं तीन फिल्मों की वजह से हम आज भी साथ हैं और इसलिए हम चौथी फिल्म साथ कर पा रहे हैं।'' देओल ने कहा कि उनकी पिछली सभी फिल्मों में अलग-अलग किरदार और कहानियां थीं, और 'बंटवारा 1947' भी इसी तरह की एक अलग कहानी है।

उन्होंने कहा, ''यह एक ऐसी फिल्म है जिसे सभी बच्चों और आज के युवाओं को देखना चाहिए। उन्हें पता चलेगा कि बंटवारे के दौरान परिवारों के साथ क्या हुआ था, उस समय जब लोगों को यह भी समझ नहीं आ रहा था कि उनके साथ क्या हो रहा है। इस फिल्म को देखने के बाद, आपको यकीन हो जाएगा कि इस दुनिया में इंसानियत से बढ़कर कुछ भी नहीं है।'' आठ साल के अंतराल के बाद फिल्मों में वापसी कर रहीं प्रीति जिंटा ने कहा कि 'बंटवारा 1947' उनकी 2004 की सफल फिल्म 'वीर-जारा' से अलग है, भले ही दोनों में भारत-पाकिस्तान का विषय शामिल है।

उन्होंने कहा, ''वह फिल्म एक प्रेम कहानी पर आधारित थी और यह एक पारिवारिक फिल्म है, जो एक परिवार की कहानी पर आधारित है।'' जिंटा ने कहा कि फिल्मों में वापसी करना एक बहुत सुखद अनुभव रहा, खासकर इसलिए क्योंकि वह फिर से देओल के साथ काम कर रही थीं। उन्होंने कहा कि फिल्म पर काम करते हुए उन्हें घर जैसा महसूस हुआ और बीच के सालों में उन्होंने अपनी जिंदगी के दूसरे पहलुओं पर ध्यान दिया, जिसमें उनकी 'स्पोर्ट्स वेंचर्स' भी शामिल थे। करण देओल ने कहा कि अपने पिता के साथ स्क्रीन साझा करना एक सपना सच होने जैसा था।

जब उनसे पूछा गया कि क्या सनी देओल ने फिल्म की शूटिंग के दौरान उन्हें कोई खास टिप्स दिए, तो करण ने कहा कि सिर्फ संतोषी जी ने ही जरूरी निर्देश दिए। वर्ष 2019 में अपने पिता के निर्देशन में बनी फिल्म 'पल पल दिल के पास' से डेब्यू करने वाले करण ने कहा कि असल जिंदगी के पिता के साथ एक भावनात्मक कहानी में काम करने से कई दृश्य मौलिक और सहज लगे। उन्होंने इस अनुभव को अविश्वसनीय बताया।

शबाना आजमी, अली फजल और अभिमन्यु सिंह की अहम भूमिकाओं वाली फिल्म 'बंटवारा 1947' सिनेमाघरों में 14 अगस्त को प्रदर्शित होने वाली है। ■

विकल्प मीमांसा

मासिक समाचार पत्रिका

देश भर में प्रसारित करने, इससे जुड़ने व इसके ब्यूरो के लिये उत्सुक पत्रकार संपर्क करें।

आप हमें अपनी विस्तृत जानकारी इस ईमेल पते पर भेज सकते हैं :

vikalpmimansa@yahoo.in

आप हमें फोन से भी संपर्क कर सकते हैं।
हमारा संपर्क सूत्र है : 09350993815

R.N.I. No. DELHIN/2014/57556

EVERY CHILD IS SPECIAL
Estd. 2002
Aashirwad Special Education School

आशीर्वाद फाउंडेशन ऑफ़ इंडिया

RZ-144b, गली नंबर 3, वैशाली

डाबरी पलम रोड, नई दिल्ली 110045

☎ 93133-23578